पलटू साहिब की बानी

दूसरा भाग

चुने हुए अति मनोहर रेखते, झूलने, अरिल छंद, कबित्त और सवैये

मुद्रक एवं प्रकाशक

बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद।

जनवरी सन् १९६८ ई०]

[मूल्य १.०५

आठवें छापे की प्रस्तावना

सन् १९०७ ईसवी में हमने एक लिपि से पलटू साहिब की कुंडलियाँ थोड़े से अरिल छंद इत्यादि के साथ छापी थीं और फिर कुछ रेख्ते, झूलने और भजन मिले जिन्हें एक छोटी सी पुस्तक के रूप में सन् १९०८ में छापा परन्तु इन पदों की दूसरी लिपि न मिलने के कारण उनके मुकाबला और भली भाँति जाँच करने का मौका न मिला अपनी अल्प बुद्धि अनुसार दो पलटूपंथी साधुओं से जहाँ तहाँ पूछ कर छाप दिया। हाल में बाबा सरजूदास जी पलटूपंथी, पुराना कोपा जिला आजमगढ़ के महन्त से भेंट हुई और इन परोपकारी महात्मा ने कृपा करके हमको अपनी हस्त-लिखित पुस्तक पलटू साहिब की बानी की दी जिससे मिलान करके त्रुटियाँ जो पहले छापे में रह गई थीं ठीक की गईं और बहुत सी नई मनोहर कुंडलियाँ, रेख्ते, झूलने, अरिल छंद, कबित्त, सवैये और भजन के पद चुनने का भी अवसर मिला। यह सब पहिले छपे हुए पदों के साथ नये सिर से तीन भागों में इस क्रम से छापे जाते हैं :—

भाग १—कुंडलियाँ।

भाग २—रेख्ता, झूलना, अरिल, कबित्त और सवैया।

भाग ३—रागों के शब्द या भजन, और साखियाँ जो ठाकुर गंगाबख्श सिंह जमींदार मौजा टँडवा जिला फैजाबाद ने कृपा करके भेजीं।

इस सहायता के लिये हम महंत सरजूदासजी को मुख्य कर और ठाकुर गंगाबख्श सिंह जी को हृदय से धन्यवाद देते हैं। महंतों में हमको आज तक ऐसे कोई नहीं मिले थे जिन्होंने अपने पंथ के प्रचारक महात्मा का ग्रंथ स्वच्छ परोपकार के निमित्त बड़े उत्साह से छापने को दिया हो।

इलाहाबाद
सन् १९६८

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक माला

जीवन चरित्र

महात्मा पलटूदास जी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिन से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश देशान्तर के साधुओं, बिद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदास जी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिनका संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी "भजनावली" नामक पुस्तक में थोड़ा सा हाल लिखा है जिससे निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नगपुरजलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" में नंगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फैजाबाद के जिले में आजमगढ़ की पच्छिम सीमा से मिला हुआ है, नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ़ या फैजाबाद के जिले में नहीं है। यहीं उनके पुरोहित गोबिंदजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था पर उनकी शांति नहीं हुई इसलिए सार वस्तु की खोज में दोनों निकले। गोबिंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिनसे गुप्त

भेद प्राप्त हुआ। तब गोबिंदजी पलटू साहिब के पास लौटकर आये और पलटूसाहिब ने उनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर उन्हें गुरु धारण किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं:—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, बसे अवध के खोर।
कहैं पलटूप्रसाद हो, भयो जक्त में सोर॥
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूले फूल॥
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करैं ब्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नवाब शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे जिनको हुए डेढ़ सौ बरस का जमाना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नगपुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहाँ उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद हैं। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचंड महिमा और कीर्ति को देख कर अयोध्या और आस पास के अखाड़ों के बैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रगट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई है:—

अवधपुरी में जरि मुए दुष्टन दिया जराय।
जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाइ॥

इनके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

जनवरी १९०८ } अधम
एडिटर, संतबानी-पुस्तक माला।

सूची रेख़तों की

सूची झूलनों की

सूची अरिल्ल छंदों की

सूची कबित्तों की

सूची सवैयों की

पलटू साहिब

भाग २

रेख़ता

॥ गुरुदेव ॥

भव सिंधु के पार जो चाहिये जान को,
केवट भेदी तलास कीजे।
घाट औ बाट के भेद का महरमी[1],
उसी की नाव पर पाँव दीजे॥
सबद की नाव पर चढ़ जो ध्याय कै,
जाय वहि पार नहिं पाँव भींजै।
दास पलटू कहै कौन मल्लाह है,
पार भव सिंधु तब उतरि लीजै॥१॥

गुरू पूरा मिलै ज्ञान साधन करै,
पकरि कै पाँच पच्चीस मारै।
आतमा देव है पिंड का द्योहरा,
काम औ क्रोध बिनु आग जारै॥
चंद औ सूर तहँ कोटि तारा उगै,
प्रान बायू सेती तत्त मारै।
गगन के बीच में तेल बाती बिना,
दास पलटू महा दीप बारै॥२॥

गुरू तो कीजिये बूझि बिचारि कै,
करम अरु भरम से रहत न्यारा।

---

(१) जानकर।

करम को बंद जम काल को फंद है,
पचि मरे गुरु सिष्य दोउ सीस धारा ॥
धनी को भेद लै बस्तु खोवै नहीं,
रैन बिनु दीप के महल सारा ।
पाँच पचीस को पकरि सठ कैद में,
लाय गुन तीन निःतत्त[१] मारा ॥
बिबेक जानै नहीं कान फूँकत फिरै,
बिना सत सबद किन काल टारा ।
दास पलटू कहै सदा वह पाक है,
गुरू तौ वही जिन तत्त गारा[२] ॥३॥
माया कर जोरि कै भई आगे खड़ी,
हुकुम जो होय मैं रहौं स्वामी ।
हुकुम जो होय सो करौं तैयार मैं,
हुकुम में तनिक ना करौं खामी[३] ॥
मुक्ति मोरि कीजिये राखिये सरन में,
तनिक जबान में भरो हामी ।
दास पलटू कहै फरक तू खड़ी हो,
बकसु भैने कहै लगे मामी ॥४॥

॥ नाम ॥

पीवता नाम सो जुगन जुग जीवता,
नाहिं वो मरै जो नाम पीवै ।
काल ब्यापै नहीं अमर वह होयगा,
आदि औ अंत वह सदा जीवै ॥
संत जन अमर हैं उसी हरि नाम से,
उसी हरि नाम पर चित्त देवै ।

(१) जो सार वस्तु नहीं है । (२) सार निकाल लिया । (३) कचाई, चूक ।

दास पलटू कहै सुधा रस छोड़ि कै,
भया अज्ञान तू छाछ लेवै ॥५॥
राखु परवाह तू एक निज नाम को,
खलक मैदान में बाँध टाटी।
मीर उमराव दिन चारि के पाहुना,
छोड़ि घर माहिं दौलत्त हाथी ॥
पकरि ले सबद जिन तोहि पैदा किया,
और सब होइँगे खाक माटी।
दास पलटू कहै देखु संसार गति,
बिना निज नाम नहिं कोई साथी ॥६॥
बोलु हरि नाम तू छोड़ि दे काम सब,
सहज में मुक्ति होइ जाय तेरी।
दाम लागै नहीं काम यह बड़ा है,
सदा सतसंग में लाउ फेरी ॥
बिलम ना लाइ कै डारि सिर भार को,
छोड़ि दे आस संसार के री।
दास पलटू कहै यही सँग जायगा,
बोलु मुख राम यह अरज मेरी ॥७॥

॥ सामर्थ ॥

कोटि हैं बिस्नु जहँ कोटि सिव खड़े हैं,
कोटि ब्रह्मा तहाँ कथैं बानी।
कोटि देवी जहाँ खड़ी हैं चेरियाँ,
कोटि फन सहस ना मरम जानी ॥
कोटि आकास पाताल फिरि कोटि हैं,
कोटि ब्रह्मांड सौ कोटि ज्ञानी।

दास पलटू कहै बड़े दरबार में,
इंद्र हैं कोटि तहँ भरैं पानी ॥८॥
भक्त के नाथ को जक्त की लाज है,
रहै सब माहिं कोउ नाहिं जानै ।
मरै सिर पीटि के आपनी भटक से,
संत के बचन को नाहिं मानै ॥
मोह औ माया से बीच पड़ि गया है,
कर्म के बंध से भर्म आनै ।
दास पलटू कहै जीव सब वही है,
बेद बेदांत में खोजि छानै ॥९॥

॥ सर्ब ब्यापक ॥

पूरब में राम है पच्छिम खुदाय है,
उत्तर औ दक्खिन कहो कौन रहता ।
साहिब वह कहाँ है कहाँ फिर नहीं है,
हिन्दू और तुरुक तोफान करता ॥
हिन्दू औ तुरुक मिलि परे हैं खैंचि[1] में,
आपनी बर्ग[2] दोउ दीन बहता ।
दास पलटू कहै साहिब सब में रहै,
जुदा ना तनिक मैं साच कहता ॥१०॥

॥ घट मठ ॥

घट औ मठ ब्रह्मंड सब एक है,
भटकि कै मरत संसार सारा ।
मृगा की बासना वही छूटै नहीं,
आप को भूलि बहु बार हारा ॥

(१) ऐंचा तानी, तरफ़दारी । (२) फ़िरका ।

आपु को खोज तू भर्म को छोड़ि दे,
कोटि बैकुंठ ससि भानु तारा।
दास पलटू कहै बहुत तहकीक करि,
बोलता ब्रह्म है राम प्यारा ॥११॥

मरै सिर पटकि कै धोख धंधा करै,
जाय तू कहाँ कुछ होस नाहीं।
बैठु सतसंग में बात को बूझि ले,
बिना सतसंग ना भर्म जाही ॥
सबै है राम का राम का वही है,
दौरि कै राम जब धरै बाहीं[1]।
दास पलटू कहै जिन्हैं तू खोजता,
सोई तो राम है तुसी पाहीं[2] ॥१२॥

॥ अद्वैत ॥

पवन पानी कहै अगिन से जोरि कै,
नाइ माटी केरी महल छाया।
पाँच है तत्त सोइ पाँच भूतात्मा,
इंद्री दस ज्ञान औ कर्म लाया ॥
मन परकिर्ति हंकार फिर जीव है,
महातत्त सोई है ब्रह्म आया।
दास पलटू कहै दूसरा कौन है,
भर्म को छोड़ि दे द्वैत माया ॥१३॥

एक अनेक अनेक फिर एक है,
एक ही एक ना और कोई।
संत को एक अनेक संसार को,
रहा भरिपूर सब माहिं सोई ॥

(१) यों तो सभी राम के हैं पर निज करके उनका वही है जिस की बाँह को राम दौड़ कर पकड़ैं। (२) तेरे निकट।

संत के अमर हैं मरैं असंत के,
नरक औ सरग यहि भाँति होई।
नरक औ सरग सब होत अनेक को,
दास पलटू हम देखि रोई ॥१४॥

॥ संत और साध ॥

धन्य हैं संत निज धाम सुख छाड़ि कै,
आन के काज को देह धारा।
ज्ञान समसेर लै पैठि संसार में,
सकल संसार का मोह टारा ॥
प्रीति सब से करैं मित्र औ दुष्ट से,
भली अरु बुरी दोउ सीस धारा।
दास पलटू कहै राम नहिं जानहूँ,
जानहूँ संत जिन जक्त तारा ॥१५॥
संत संसार में आय परगट भये,
नाम दृढ़ाय कै जक्त तारा।
भजन भगवान को कोऊ ना जानता,
संत यहि हेतु औतार धारा ॥
राम के नाम पर अदल चलाय कै,
काल के सीस पर धौल मारा।
दास पलटू कहै रहे सब डूबते,
संत ने पकरि कै किहा पारा ॥१६॥
संत औ राम को एक कै जानिये,
दूसरा भेद ना तनिक आनै।
लाली ज्यों छिपी है मिहदी के पात में,
दूध में घीव यह ज्ञान ठानै ॥

फूल में बास ज्यों काठ में आग है,
संत में राम यहि भाँति जानै।
दास पलटू कहै संत में राम है,
राम में संत यह सत्य मानै ॥१७॥

संत दरबार तहसील संतोष की,
कचहरी ज्ञान हरि नाम डंका।
रिद्धि औ सिद्धि दोउ हाथ बाँधे खड़ी,
बिबेक ने मारि कै दिहा धक्का॥
मुक्ति सिर खोलि कै करै फिरियाद को,
दिहा दुदकार यह अदल बंका[१]।
मारि माया कहै अमल ऐसा किहा,
दास पलटू अहै हरीफ़ पक्का ॥१८॥

सबद बिबेकी मिलै जो आइ कै,
उसहु की सुनै कछु आप कहना।
उसी टकसार का होय तो बोलिये,
बिना टकसार सुनि मौन रहना॥
सत्त की गाय को सुरति से दूहि कै,
दही जमाय के तत्त महना।
दास पलटू कहै आपनी मौज में,
यार फक्कीर तुम खुसी रहना ॥१९॥

काच कंचन सेती भेद ना राखही,
दुष्ट औ मित्र को एक जानै।
निंदा अस्तुति सेती पीठ दे बैठही,
भली औ बुरी कछु नाहिं मानै॥

---

(१) बाँका।

छोड़ जग आस को भरम को बोरि दे,
पाप औ पन्न इक घाट आनै।
दास पलटू कहै सोई अनन्य है,
कर्म संसार को पकरि भानै ॥२०॥

॥ सतसंग ॥

बिना सतसंग ना कथा हरि नाम की,
बिना हरि नाम ना मोह भागै।
मोह भागे बिना मुक्ति ना मिलैगी,
मुक्ति बिनु नाहिं अनुराग लागै॥
बिना अनुराग से भक्ति ना मिलैगी,
भक्ति बिनु प्रेम उर नाहिं जागै।
प्रेम बिनु नाम ना नाम बिनु संत ना,
पलटू सतसंग बरदान माँगै ॥२१॥

कौन तू सकस है चेत करु आपु को,
कहाँ तू आइ कै मन्न लाया।
केतिक बेर तू गया ठगाय है,
आपना भेद तू नाहिं पाया॥
भटक यह मिटैगी काम तब होयगा,
केतिक बेर तू भटकि आया।
दास पलटू कहै होय संस्कार जब,
बिना सतसंग ना छुटै माया ॥२२॥

गगन मैदान में ध्यान धूनी धरै,
मन में लखि गुरू का ज्ञान छाला।
चंद्र सिर तिलक है तत्त सुमिरन करै,
जपै हरि नाम अवधूत बाला॥

प्रेम भभूति बिबेक की फावड़ी,
गूदरी खुसी अरु आड़ माला।
दास पलटू कहै संत की सरन में,
लिखा नसीब को मेटि डाला ॥२३॥
मन मूरति करै तनै देवल बना,
निकट में छोड़ि कहँ दूरि धावै।
जल पाषान कछु खाय बोलै नहीं,
बिना सतसंग सब भटकि आवै॥
यही तहकीक करु बोलता कौन है,
यही है राम जो नित्त खावै।
दास पलटू कहै बोलता पूजिये,
करै सतसंग तब भेद पावै ॥२४॥

॥ चितावनी ॥

देह और गेह परिवार को देखि कै,
माया के जोर में फिरै फूला।
जानता सदा दिन ऐसे ही जायँगे,
सुंदरी संग सुखपाल झूला॥
चारि जून खात है बैठि कै खुसी से,
बहुत मुटाई कै भया थूला।
सेज-बँद[1] बाँधि कै पान को चाभते,
रैन दिन करत है दूध कूला[2]॥
जानता अमर हूँ मरूँगा अब नहीं,
बाघ की रीस[3] जा काल हूला।
दास पलटू कहै नाम को याद करु,
ख्वाब की लहरि में काह भूला ॥२५॥

(१) डोरी जिस से बिछौने को पलँग के पायों से बाँध देते हैं। (२) कुल्ला। (३) तरह।

राम के नाम से भूलना नाहिं है,
　　खायगा यार तू फेरि गोता।
काम औ क्रोध में लगा दिन राति तू,
　　लोभ औ मोह का खेत जोता।
भई जागीर तागीर[1] हजूर से,
　　काल ने आय के लिहा पोता[2]।
दास पलटू कहै पड़ा किस ख्याल में,
　　घरी पल पहर में कूच होता ॥२६॥

॥ प्रेम ॥

जाहि तन लगी है सोई तन जानिहै,
　　जानिहै वही सतसंग बासी।
कोटि औषधि करै बिरह ना जायगा,
　　जाहि के लगी है बिरह गाँसी ॥
नैन झरना बन्यो भूख ना नींद है,
　　परी है गले बिच प्रेम फाँसी।
दास पलटू कहै लगी ना छूटिहै,
　　सकल संसार मिलि करै हाँसी ॥२७॥
गगन में मगन है मगन में लगन है,
　　लगन के बीच में प्रेम पागै ॥
प्रेम में ज्ञान है ज्ञान में ध्यान है,
　　ध्यान के धरे से तत्त जागै ॥
तत्त के जगे से लगै हरि नाम में,
　　पगै हरि नाम सतसंग लागै।
दास पलटू कहै भक्ति अबिरल मिलै,
　　रहै निसंक जब भर्म भागै ॥२८॥

---

(१) तगादा। (२) माल-गुजारी।

कफ़न को बाँधि कै करे तब आसिकी,
आसिक जब होय तब नाहिं सोवै।
चिता बिनु आगि के जरै दिन राति जब,
जीवत ही जान से सती होवै॥
भूख पियास जग आस को छोड़ करि,
आपनी आपु से आप खोवै।
दास पलटू कहै इसक मैदान पर,
देइ जब सीस तब नाहिं रोवै॥२९॥

प्रेम की घटा में बुंद परै पटापट,
गरज आकास बरसात होती।
गगन के बीच में कूप है अधोमुख,
कूप के बीच इक बहै सोती॥
उठत गुंजार है कुंज की गली में,
फोरि आकास तब चलो जोति।
मानसरोवर में सहसदल कँवल है,
दास पलटू हंस चुग मोती॥३०॥

॥ सूरमा ॥

होय रजपूत सो चढ़ै मैदान पर,
खेत पर पाँच पचीस मारै।
काम औ क्रोध दुइ दुष्ट ये बड़े हैं,
ज्ञान के धनुष से इन्हें टारै॥
कूद परि जाइ कै कोट काया महैं,
आगि लगाय के मोह जारै।
दास पलटू कहै सोई रजपूत है,
लेहि मन जीति तब आपु हारै॥३१॥

महा दल मोह पर संत जन चढ़े हैं,
फौज बिवेक तैयार कीन्हा।
ज्ञान निस्सान को चढ़े बजाय कै,
हरावल[1] छमा घर घाट चीन्हा॥
भक्ति देवान आचाह पैदर[2] बना,
बिराग असवार से घेर लीन्हा॥
दास पलटू कहै मोह दल साफ भा,
तोप संतोष छोड़ाइ दीन्हा॥३२॥

खैंचि समसेर[3] तब पैठु रनसेर[4] में,
करै ना देर सोइ साध बंका[5]।
काम दल जारि कै क्रोध को मारि कै,
रहै निर्सङ्क ना करै संका॥
मनराव को पकरि कै ज्ञान से जकरि कै,
छिमा दै ढाल गढ़ लेत लंका।
पलटू सोई दास कहँ सुन्न में बास तब,
गैब घर बैठि के देत डंका॥३३॥

ज्ञान दल छोहनी भालु बानर लिहे,
चढ़ा है छिमागढ़ जाय लंका।
प्रेम हनुमंत जब चला है गरजि कै,
दिहा गढ़ लाय बजाय डंका।
मोह समुद्र का बाँधि बिबेक से,
उतरि गइ फौज ना तनिक संका॥
हंकार सुनि रावना भागु ना बचैगा,
दास पलटू संग बीर बंका॥३४॥

(१) पहरेदार जो फौज के आगे रहते हैं। (२) सिपाही। (३) तलवार। (४) लड़ाई का मैदान। (५) बाँका।

राज तन में करै भक्ति जागीर लै,
ज्ञान से लरै रजपूत सोई।
छमा तलवार से जगत को बसि करै,
प्रेम की जुज्झ[1] मैदान होई॥
लोभ औ मोह हंकार दल मारि कै,
काम औ क्रोध ना बचै कोई।
दास पलटू कहै तिलकधारी[2] सोई,
उदित तिहु लोक रजपूत सोई॥३५॥

गुरू के भेद को पाइ कै सिकिल करु,
उसी के सबद में गरक रहना।
ज्ञान का ढोल बजाय चौगान में,
कफन को बाँधि मैदान चढ़ना॥
आपने ख्याल में मगन दिन राति रहु,
जगत के भरम को दूरि करना।
दास पलटू कहै मुक्ति होइ जायगी,
गुरू के इसिम पर ठौर मरना[3]॥३६॥

सत्त को जीन संतोष लगाम है,
गुरु ज्ञान को पाखर जाय डारा।
बिस्वास रकाब में जुगति की एड़ दै,
पाँच पच्चीस मवास मारा॥
पवन का घोड़ा सुरति असवार है,
प्रेम की ढाल है मर्म भाला।
बबेक देवान इन्साफ पर बैठि कै,
मुक्ति को कैद जंजीर डाला॥३७॥

---

(१) लड़ाई। (२) ऐसा प्रतापी राजा जो तिलक देकर औरों को राजा बना सकता है। (३) गुरू के नाम पर जान दे देना।

ज्ञान समाज में जाय बैठे जबै,
कामदेव जाय तरवार झारी।
माया मोह का घोड़ा दौड़ावता,
संग लिये फौज मृग-नैनि नारी॥
वो तो भागि के दसवें द्वार लुका,
रिसियाय के हम ने तान मारी।
पलटू जब ज्ञान समसेर खैंची,
तब कामदेव की फौज हारी॥३८॥

॥ संतोष ॥

गुरू जो दिया है सोई तू लिये रहु,
उसी में बहुत बिस्वास करना।
होयगा बहुत फिरि सबद जो लगेगा,
चित्त को चेति के ध्यान धरना॥
चतुर जो होयगा करेगा कसब[१] को,
बुंद ही बुंद सामुद्र भरना।
दास पलटू कहै सिफत है सुरति की,
और कोइ ख्याल में नाहिं परना॥३९॥
संतोष के धरे से खाय गज पेट भरि,
स्वान इक टूक को केतिक धावै।
संत की वृत्ति, अजदहा[२] की चाहिये,
चले बिनु फिरे आहार पावै॥
सिंह आहार को करत है सहज में,
स्यार दस बीस घर मूड़ नावै।
दास पलटू कहै और कछु ना करै,
भक्ति के मूल संतोष लावै॥४०॥

(१) अभ्यास। (२) अजगर।

॥ ध्यान ॥

दृष्टि कच्छप[1] के री ध्यान जो लाइये,
अंडा सुरति से सेइ आवै।
तार मकरी गहे उतरि के आवती,
उलटि के तार गहि फेरि जावै॥
चेटुका[2] गिरा ज्यों अलल के पङ्ख का,
जमा पर बीच में उलटि धावै।
दास पलटू कहे भृङ्गी ज्यों कीट को,
देत जियाइ त्यों चित्त लावै।४१॥

॥ उपदेश ॥

आतम सोई उपाधि का मूल है,
काम औ क्रोध फल फूल लागा।
लोभ औ मोह बहु भाँति साखा चली,
डार औ पात उठि कर्म जागा॥
संजम कुल्हारी से पेड़ को काटि के,
डार औ पात सब सूखि जागा।
दास पलटू कहे मूल ना सींचिये,
बिना जल दिहे सब रोग भागा॥४२॥
एक ही फाँस में बझे तिहुँ लोक सब,
बझे तिहुँ लोक इक संत छूटे।
एक ही रास्ता कर्म का बड़ा है,
गये उस राह सो सभे लूटे॥
राह झाड़ी मँहै प्रेम के औघटे,
गये बचि संत नहिं रोम टूटे।

(१) कछुवा। (२) बच्चा।

दास पलटू कहै संत की राह तजि,
कर्म की राह गे कर्म फूटे ॥४३॥
छोड़ि बेकाम को काम करु आपना,
गफलत माँहै दिन जात बीता।
धोख धन्धा करै मरै सिर पटकि कै,
राम के नाम से रहा रीता॥
ब्याज बट्टा मँहै लगा दिन रात तूँ,
चला तन हारि ब्योहार जीता।
दास पलटू कहै याद करु याद करु,
बोल बे बालके राम सीता ॥४४॥
पुन्न जो करै सो पुन्न को पाइहै,
पुन्न से छिन्न मृत लोक आवै।
करम को जीव सो सदा करमै मँहै,
जनम औ मरन फिरि करम पावै॥
पड़ा वह रहै चौरासी के फेर में,
चौरासी को छोड़ि वह कहाँ जावै।
दास पलटू कहै द्वार दसएँ केरी,
राह में जाय सो मुक्ति पावै ॥४५॥
दास कहाइ कै आस ना कीजिये,
आस जो करै सो दास नाहीं।
प्रेम तो एक जो लगा संसार में,
भक्ति गइ दूरि अब जक्त माहीं॥
चाहिये भक्ति को जक्त से तोरिये,
जोरिये जक्त से भक्ति जाही।
दास पलटू कहै एक को छोड़ि दे,
तरवार दुइ म्यान इक नाहिं चाही ॥४६॥

गाय बजाय के काल को काटना,
और की सुनै कछु आपु कहना।
हँसना खेलना बात मीठी कहै,
सकल संसार को बस्सि करना॥
खाइये पीजिये मिलै सो पहिरिये,
संग्रह त्याग में नाहिं परना।
बोलु हरि भजन को मगन ह्वै प्रेम से,
चुप्प जब रहौ तब ध्यान धरना॥
भेष भगवंत के चरन को ध्याइ कै,
ज्ञान की बात से नाहिं टरना।
मिलै लुटाइये तुरत कछु खाइये,
माया औ मोह को ठौर मरना॥
दुक्ख और सुक्ख फिरि दुष्ट औ मित्र को,
एक सम दृष्टि इक भाव भरना।
दास पलटू कहै राम कहु बालके।
राम कहु राम कहु सहज तरना॥४७॥
तन मन धन सब आनि आगे धरै,
तेहू को नाहिं इतबार कीजै।
ज्ञानी औ चतुर को सबद ना दीजिये,
माया के जीव से सबद छीजै॥
जहाँ गौं मिला फिरि उलटि फिरि जायगा,
प्रीति कितनो करै परखि लीजै।
दास पलटू कहै प्रेमी जो सबद का,
तेहू को परखि कै सबद दीजै॥४८॥
होहु सिष बालके काम करु बूझि कै,
कुबुधि को देखि कै दूरि भागो।

बात है काम की बुरा ना मानिये,
कनक औ कामिनी दूरि त्यागौ ॥
प्रीति ना कीजिये मोह में परहुगे,
छोड़ि कुसंग सतसंग लागौ ।
दास पलटू कहै कर्म को मेटि कै,
सीस पर सबद कै दाग दागौ ॥४६॥

कूद बे बालके कहर दरियाव में,
जीव की लालचै छोड़ु भाई ।
ताकना नाहिं अब स्यार से सिंह है,
गुरू के चरन में चित्त लाई ॥
आखिर धौं मरैगा कूद भड़ाक से,
कूदने सेती ना गम्य खाई[१] ।
तुझे क्या लाज है लाज है उसी को,
उसी के सीस दे भार नाई ॥
बार ना बाँकिहै छोड़ु डगमगी को,
तनिक बिस्वास करु एक राई[२] ।
दास पलटू कहै कहर की लहर से,
बचैगा सोई जो कूदि जाई ॥५०॥

काछ जो काछिये नाच सोइ नाचिये,
काछ बिनु नाच ना तनिक भावै ।
बाना है सिंह को चाल है सियार की,
रहा वह स्यार नहिं चाल पावै ॥
भेष धरे हंस सुभाव रे काग को,
हंस जब होय सुभाय जावै ।

(१) देर करना। (२) राई भर।

दास पलटू कहै काछ तो नाचि ले,
कथनी रहनी इक घाट आवै ॥५१॥
नाचना नाचु तो खोलि घूँघट कहै,
खोलि के नाचु संसार देखै।
खसम रिझाव तो ओट को छोड़ि दे,
भर्म संसार को दूरि फेंकै॥
लाज किसकी करै खसम से काम है,
नाचु भरि पेट फिर कौन छेकै।
दास पलटू कहै तुहीं सोहागिनी,
सोव सुख सेज तू खसम एकै॥५२॥
सुन्दरी पिया की पिया को खोजती,
भई बेहोस तू पिया के कै।
बहुत सी पद्मिनी खोजती मरि गई,
रटत ही पिया पिया एक एकै॥
सती सब होत हैं जरत बिनु आगि से,
कठिन कठोर वह नाहिं झाँकै।
दास पलटू कहै सीस उतारि कै,
सीस पर नाचु जो पिया ताकै॥५३॥
जक्त के नाथ की जागती कला है,
रहै सब माहिं कोइ नाहिं जानै।
मरै सिर पटकि कै भटक से आपनी,
संत के बचन को नाहिं मानै॥
मोह औ मया से बीच परि गया है,
करम के बंध से भरम आनै[1]।
दास पलटू कहै जीव सब वही[2] है,
बेद बेदांत में खोजि छानै॥५४॥

---

(१) लावै। (२) जीव ब्रह्म ही है।

मुद्रा को पाइ कै करम को त्यागिये,
बिना मुद्रा नहीं करम त्यागै।
बस्तु को पाइ संसार तब छोड़िये,
गये दोउ दिसा से भीख माँगै॥
करम निःकरम यह दोऊ मति सार है,
बीच मँहि बहै तो कहाँ लागै।
दास पलटू कहै दोऊ को बूझि कै,
मरद जो होइ सो निकरि भागै॥५५॥

सुरति ताना करै पवन भरनी भरै,
माँड़ो प्रेम अँग अंग भीनै।
तत्तु फुलाय कै ज्ञान का कूच[१] लै,
गुढ़ो[२] छुटि जाय तब रहै झीनै॥
सुषमना राछ बैराग लपेटना,
सबद ढरकी चलै नाहिं छीनै।
तन करगह करै नरी तुरिया भरै,
दास पलटू सिरी साफ बीनै॥५६॥

तेल का कसब[३] तमोली जो सीखेगा,
तेल से पान को दूरि त्यागै।
निरगुनी सरगुनी कसब दुइ जगत में,
आपने कसब में दोऊ जागै॥
बूझना नाहिं है और के कसब को,
और के कसब से दूरि भागै।
दास पलटू कहै कसब करु आपना,
और के कसब में आगि लागै॥५७॥

(१) कूँचा। (२) गुरची या ऐंठन से सूत में जो गाँठ सी पड़ जाती है। (३) उद्यम।

॥ उपदेश भेष को ॥

गुरू का सबद दाउ कान में मुद्रिका,
उनमुनी तिलक सिर तत्त ताखी।
प्रेम का चोलना सत्त सेल्ही बनी,
मान कौ मर्दि कै करै खाखी[1] ॥
संतोष खुराक बिबेक की फावड़ो,
हरि नाम के अमल को रहै चाखी।
दास पलटू कहै होय बिज्ञान जब,
बेद कुरान सब भरैं साखी ॥५८॥
यार फक्कीर तू परा किस ख्याल में,
पाँच पच्चीस संग तीस नारी।
एक तुम छोड़िया तीस ठो संग में,
होत अस ज्ञान से नर्क भारी॥
तीस के कारने भीख तू माँगता,
एक ने कवन तकसीर पारी।
दास पलटू कहै खेल यह ना बदो,
छुटै जब तीस तो छोड़ प्यारी ॥५६॥
संसार सुख छोड़ि कै भया फक्कीर तू,
भया फक्कीर क्या स्वाद पाया।
पेट छूटा नहीं भीख क्या माँगता,
पाँच पच्चीस सँग लगी माया॥
दारा एक तुम तजी घर बीच में,
पाँच पच्चीस को संग लाया॥
दास पलटू कहै क्या नफा तोहि मिला,
राम का नाम जो नाहिं आया ॥६०॥

---

(१) मिट्टी।

यार फक्कीर तू बाँधु फाका कँहै,
करो संतोष यह अर्ज मेरी।
रहो बेफिक्र ह्वै बाँधि कफनी कँहै,
पहिरि के बैठु जा प्रेम बेरो॥
करो फराख दिल फहम टुक कीजिये,
फरक संसार से पीठ फेरी।
दास पलटू कहै फकर फारिग हुआ,
फटी हजूर में फरद तेरो॥६१॥

फकीर के बालके गुसा ना कीजिये,
गुसा फकीर को नाहिं अच्छा।
बात मीठो कहौ नीक सब को लगै,
भेष भगवंत को पकरि पच्छा॥
रहनि ऐसी रहौ बहुत गरीब ह्वै,
सकल संसार मिलि करै रच्छा।
दास पलटू कहै बहुत चुचुकारि कै,
बचन को मानि अब लेहु बच्चा॥६२॥

यार फक्कीर फकीरी जो कीजिये,
किसी की नाहिं परवाह करना।
साहिब का होइ अब होयगा कौन का,
उसी के नाम पर ठौर मरना॥
परवाह इक उसी की जिसी का भया तू,
उसी के द्वार से नाहिं टरना।
दास पलटू कहै मजा जब मिलैगा,
हाजिर हजूर संतोष धरना॥६३॥

॥ ज्ञान ॥

ज्ञान का चाँदना भया आकास में,
मगन मन भया हम लखि पाया।
दृष्टि के खुले से नजर सब आयगा,
लखा संसार यह झूठि माया॥
जीव और ब्रह्म के भेद को बूझि कै,
सबद की साच टकसार लाया।
दास पलटू कहै खोलि परदा दिया,
पैठि के भेद हम देखि आया॥६४॥
छोड़ि क ज्ञान को होय बिज्ञान जब,
सत्त के सबद का सोई दागी।
सुन्न समाधि में ध्यान को लाइ कै,
सहज का ख्याल सोइ बीतरागी[१]॥
गगन के बीच में तत्त में मगन है,
अबिरल भक्ति उर जासु जागी।
तुरियातीत है चित्त जब इक भयो,
रैन दिन मगन है प्रेम पागी॥
जागती जोति में रहै गरकाब है,
सबद के बीच में सुरति लागी।
दास पलटू कहै संत सोइ चक्कवै[२],
भया अद्वैत जब भर्म भागी॥६५॥

॥ रहनी ॥

छोड़ि कथनी कँहै ज्ञान[३] से जुदा रहु,
रैन औ दिवस क्या पढ़ै गीता।
केतिक पंडित मुए नरक में सिधारते,
लोभ औ मोह बसि रहा रीता[४]॥

(१) राग से रहित। (२) चक्रवर्ती। (३) बाचक ज्ञान। (४) खाली।

बिना रहनी रहे मुक्ति ना मिलैगी,
काम औ क्रोध को नाहिं जीता।
दास पलटू कहै बैठु सतसंग में,
आपु में देखि ले राम सीता ॥६६॥

॥ भेद ॥

हम बासी उस देस के पूछता क्या है,
चाँद ना सुरुज ना दिवस रजनी।
तीन की गम्मि नहिं नाहिं करता करै,
लोक ना बेद ना पवन पानी ॥
सेस पहुँचै नहों थकित भइ सारदा,
ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्म ज्ञानी।
पाप ना पुन्न ना सरग ना नरक है,
सुरति ना सबद ना तीन तानी[1] ॥
अखिल[2] ना लोक है नाहिं परजंत[3] है,
हद्द अनहद्द ना उठै बानी।
दास पलटू कहै सुन्न भी नाहिं है,
संत की बात कोउ संत जानी ॥६७॥
जोग को पाइ कै जुगत को ध्याइ कै,
ज्ञान अरु ध्यान इक घाट करना।
असी संगम महैं कड़क बिजुली छुटै,
उसी के सीस पै सुरति धरना ॥
सहस कोटि ऊँच है बीच में भानु है,
साँपनी पकरि के बोरि मरना।
सहस गुंजार में परमली[4] झाल है,
झिलमिली उलटि के पौन भरना ॥

(१) तीन गुनों का गम्य नहीं है। (२) अखण्ड। (३) हद। (४) सुगंधित।

संखिनी डंकिनी सोर सब करैंगी,
सोर सुनि उहाँ से नाहि टरना ।
बंक पहार में साँकरी गैल है,
गली के खंड के बीच झरना ॥
हद्द अनहद्द के बीच में जंगला,
सिंह को देखि के नाहिं डरना ।
कर्मनी नदी पै भर्मनी ताल है,
ताल के बीच में रहता अरना ॥
चौक से निकरि कै जाय बाहर हुआ,
तत्त को पकरि क्यों बैठि रहना ।
सातवें महल पर तत्त का जाल है,
तत्त के जाल से तुरत फिरना ॥
आठवें महल में कहकहा[१] दीवाल है,
दीवाल को झाँकि के कूद परना ।
दास पलटू कहै छोड़ मन कसमसी,
पैठि दरियाव दीदार करना ॥६८॥
हद्द अनहद्द के पार मैदान है,
उसी मैदान में सोय रहना ।
पैर दक्खिन करै सीस उत्तर धरै,
सबद की चोट सम्हारि सहना ॥
ज्ञान औ ध्यान दोउ थकहिंगे हारि कै,
सहज समाधि में तत्त महना ।
चन्द औ सूर उहँ पहुँचि ना सकहिंगे,
खुसी के लोक में सोक दहना ॥

(१) एक दीवार कहानी का जिसका होना चीन देश में मशहूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दाख पड़ता है और ऐसा हर्ष होता है कि हँसी के मारे देखने वाला बेइख्तियार हो कर उधर कूद कर गायब हो जाता है ।

तानि चादर कहै करो आराम तुम,
बचन को मानि क गाँठि गहना।
दास पलटू कहै दूर की बात है,
बूझि के किसी से नाहि कहना ॥६९॥
गगन बीच में अमी को बुंद है,
पियत इक साँपिनी धार धारा।
साँपिनी मारि के पिये कोउ संत जन,
मुए संसार को फटकि सारा ॥
सेस औ संभु नर झुलत हिंडोलना,
कहत औ सुनत ठग बेद हारा।
दास पलटू कहै बुंद है सिंधु में,
मथे ब्रह्मंड तब होय न्यारा ॥७०॥
गगन के बीच में ऐन मैदान है,
ऐन मैदान के बीच गल्ली।
सहसदल कँवल में भँवर गुंजार है,
कँवल के बीच में सेत कल्ली ॥
इड़ा औ पिंगला सुखमना घाट है.
सुखमना घाट में लगी नल्ली।
सुन्न सागर भरा सत्त के नाम से,
तेहि के बीच में सुरति हल्ली ॥
अछै इक बृच्छ है तेहि के डारि में,
पड़ा हिंडोलना प्रेम झुल्ली।
अमी रस चुवै सोइ पियत इक नागिनी,
नागिनी मारि कै बुंद रल्ली ॥

बंक के नाल पर तहाँ इक ऊँच है,
तेहुँ के सीस चढ़ि जोति बल्ली।
जोति के बीच में तहाँ इक राह है,
राह के बीच में नाद चल्ली॥
नाद के बीच में तहाँ इक रूप है,
रूप को देखि कै रहत सल्ली[1]।
दास पलटू कहै होय आरूढ़ जब,
संत को सहज समाधि भल्ली॥७१॥

गगन में दामिनी चौक में चाँदनी,
चाँद औ सूर गलि भये पानी।
ज्ञान की काछनी तान में तातनो,
सत्त के सबद की कथा बानी॥
अकथ की काथनी तत्त की माथनी,
पानी औ पवन इक घाट आनी।
दिवस में राजनी[2] सजन में साजनी,
दास पलटू की मुई नानी॥७२॥

इक कूप गगन के बीच यारो,
जहँ सुरति की डोर लगावता है।
गुरमुख होवै सो भरि पीवै,
निगुरा नहीं जल पावता है॥
बिन हाथ से ताल मृदंग बाजै,
बिन जंत्री जंत्र बजावता है।
पलटू बिन कान से हम सुना,
बीना कोई सकस बजावता है॥७३॥

---

(१) शांति। (२) रात।

अष्ट दल कँवल के पात को तोरि कै,
कली पर भँवर तब गगन गाजा।
सुन्न में धजा को बाँधि आगे चले,
जाय निस्सान अनहद्द बाजा॥
चाँद औ सूर दोउ उलटि पाताल गे,
उनमुनी ध्यान तहँ पवन साजा।
सिंध परि कूप मँ गंग पच्छिम बहै,
सेत पहार पर भँवर भाजा॥
सहसदल कँवल में हंस मोती चुगै,
चंदन के गाछ पर कमठ[1] लागा।
अधर दरियाव में लहर पानी बिना,
गैब की दृष्टि से तत्त माँजा॥७४॥

सातहू सर्ग अपवर्ग के पार में,
जहाँ में रहौं ना पवन पानी।
चाँद ना सूर ना राति ना दिवस है,
उहाँ के मर्म ना बेद जानी॥
ज्ञान ना ध्यान ना ब्रह्मा न बिस्नु है,
पहुँच ना सकै कोउ ब्रह्म-ज्ञानी।
दास पलटू कहै एक ही एक है,
दूसरा नहीं कोउ राव रानी॥७५॥

जोग ना जुगत ना प्रानायाम ना,
सुन्न में ध्यान ना धरत ध्यानी।
नाहिं कछु ज्ञान है नाहिं बैराग है,
जाय ना सकै तहँ पवन पानी॥

(१) कछुवा।

इड़ा ना पिंगला नाहिं कछु साधना,
सुरत ना सबद ना उठत बानी ।
झिलमिली जोति ना, नाहिं है उनमुनी,
चाँद ना सूर ना ब्रह्म-ज्ञानी ॥
सुषमना नाहिं कछु पाँच मुद्रा नहीं,
चित्त ना बुद्धि ना तत्त ज्ञानी ।
मोती ना हंस ना कँवल ना भँवर ना,
हद्द अनहद्द दोउ नाहिं मानी ॥
गिरा ना लबिका बंक तुरिया नहीं,
अजपा जाप नहि तीन तानी ।
सहज समाधि के परे की बात है,
दास पलटू कोई संत जानी ॥७६॥

तिरकुटी घाट को उतरु सम्हारि कै,
सुषमना खैंचु गुन बाँधि खूँटा ।
बीच पहार में साँकरी गली है,
गली में कुंड जल परै टूटा ॥
भँवर को देखि कै नाव मुरेरु तू,
चली है नाव तब कुंड छूटा ।
दास पलटू कहै नाव सम्हारना,
सोत में सोत ब्रह्मंड फूटा ॥७७॥

॥ मन ॥

मने को राज है एक तिहुँ लोक में,
तेहि के अमल में डंड लागै ।
पाँच मोसील[1] मिलि लगे घर घर मंहै,
मारि औ पीटि के रोज माँगै ॥

(१) मोसिल यानी तहसील करने वाले ।

चोरी कै भीख लै देत हैं दंड सब,
अमल तो एक फिर कहाँ भागै।
दास पलटू कहै मच्यो अंधेर है,
बसै सतसंग यहि अमल त्यागै ॥७८॥

मुलुक सरीर में भया नबाब मन,
लोभ औ मोह देवान जा के।
अमल दस दिसि किहा फौज को राखि कै,
काम औ क्रोध सीपाह बाँके ॥
पाप तहसील वोसूल होने लगी,
कुमति खजानची रहे ता के।
दास पलटू कहै पाँच पचीस को,
भया अख्त्यार बेइमान पाके ॥७९॥

इधर से उधर तू जायगा किधर को,
जिधर तू जाय मैं उधर आवों।
कोस हज्जार तू जाय चलि पलक में,
ज्ञान की कुटी में उहैं छावों ॥
सुमति जंजीर को गले में डारि कै,
जहाँ तू जाय मैं खींच लावों।
दास पलटू कहै मारिहों ठौर में,
जहाँ मैदान में पकरि पावों ॥८०॥

॥ माया ॥

माया के फंद से बचा ना कोऊ है,
माया ने कहा संसार सोगी।
सुर नर मुनि फिरि उलटि गे आइ कै,
छोड़ि बैराग फिरि भये भोगी ॥

सन्यासी बैरागी उदासी औ सेवरा,
सेख दुरबेस औ जती जोगी।
दास पलटू कहै बूझि हम देखिया,
बिना बिबेक सब भेष रोगी ॥८१॥
माया की लहर संसार सब मगन है,
खाय भरि पेट भरि नींद सोया।
राम को नाम नहिं चेत सपनेहु किहा,
सुभग तन पाइ कै वृथा खोया ॥
मोर औ तोर के परा झकझोर में,
काम औ क्रोध का बीज बोया।
दास पलटू कहै देखि संसार को,
बैठि कै महूँ भरि पेट रोया ॥८२॥
माया कलवारिनी देत बिष घोरि कै,
पियै बिष सबै ना कोऊ भागै।
संसार बौराइ गा[1] भया बेहोस सब,
लेत नँगियाय[2] ना कोऊ जागै ॥
अमल बाँका बड़ा छुटै ना चीसका[3],
जीव के संग जब मुहें लागै।
एक ठौ परे हैं धूर में लोटते,
दास पलटू एक चोखि माँगै ॥८३॥
माया है राम की लगैगी दौरि कै,
यार फक्कीर सम्हारि रहना।
लोभ औ मोह की बात ना मानिये,
भूख औ नींद जरूर सहना ॥
भली औ बुरी संसार सब कहैगा,
गुरू के सबद की ओर गहना।

(१) गया। (२) सबस लूट लेना। (३) चसका, स्वाद।

दास पलटू कहै समय पर बोलिये,
बात सब छोड़ि दे फास[१] कहना ॥८४॥

भाग रे भाग फक्कीर के बालके,
कनक औ कामिनी बाघ लागा।
मारि तोहि लेहिंगे पड़ा चिल्लायगा,
बड़ा बेकूफ तू नाहिं भागा ॥
सिंगी ऋषि हू से तो मारि लिये,
बचे ना कोऊ जो लाख त्यागा।
दास पलटू कहै बचैगा सोई जो,
बैठि सतसंग दिन राति जागा ॥८५॥

॥ कर्म भर्म ॥

पूरब ठाकुरद्वारा पच्छिम मक्का बना,
हिन्दू औ तुरुक दुइ ओर धाया।
पूरब मूरति बनी पच्छिम में कबुर है,
हिन्दू औ तुरुक सिर पटकि आया ॥
मूरति औ कबुर ना बोलै ना खाय कछु,
हिन्दू औ तुरुक तुम कहा पाया।
दास पलटू कह पाया तिन्ह आप में,
मूए बैल ने कब घास खाया ॥८६॥

॥ निन्दक ॥

संत का निन्दा को करत जो देखिये,
कान को मूदि ले पाप लागै।
पाप के लगे से नरक में जायगा,
त्राहि कै त्राहि कै दूरि भागै ॥
मित्र जो होय तो दुष्ट सम जानिये,
संत की निन्दा सुनि दूरि त्यागै।

---

(१) खुले

दास पलटू कहै करै औ सुनै जो,
नरक के बीच में भीख माँगै ॥८७॥
देखि निन्दक कहै करौं परनाम मैं,
धन्य महराज तुम भक्ति धोया।
किहा निस्तार तुम आइ संसार में,
भक्त के मैल बिन दाम खोया॥
भयो परसिद्ध परताप से आप के,
सकल संसार तुम सुजस बोया।
दास पलटू कहै निन्दक के मुए से,
भया अकाज मैं बहुत रोया ॥८८॥

॥ मिश्रित ॥

काम औ क्रोध को आगि बिनु जारि कै,
महादल मोह मैदान टारा।
पाप औ पुन्न के भरम को छोड़ि कै,
गगन के बीच इक जोति बारा॥
जीव अमृत पिवै चुवै आकास से,
जुक्ति से नाथिया नाग कारा।
दास पलटू कहै संत सो अमर हैं,
उलटि कै पकरि तिहुँ काल मारा ॥८९॥
पाँच ने सकल संसार को बसि किया,
लोभ औ मोह देवान जा के।
काम औ क्रोध मसलहतिका[१] वे दोऊ,
पाप औ पुन्न सीपाह वा के॥
उजुरख्वाही नहीं गई रैयत सबै,
मुलुक में मारि के किया साके[२]।

(१) सलाहकार। (२) अपना सम्बत अर्थात् कीर्ति चलाई।

दास पलटू कहै देखि इस अमल को,
भागि मैं संत की सरन ताके ॥६०॥
ज्ञान ना ध्यान ना जोग ना जुगति है,
मुक्ति चेरी भई द्वार ठाढ़ी ।
तीरथ ना बरत ना दान ना पुन्न है,
परी जमराज पर चोट गाढ़ी ॥
पूजा अचार ना नेम ना धर्म है,
लेन को आये बैकुंठ बाढ़ी ।
दास पलटू कहै राह सब छोड़ि कै,
सहज की राह इक संत काढ़ी ॥६१॥
सुरति जमुना वही ज्ञान मथुरा बसा,
गोकुला ग्राम बिस्वास पाया ।
संत जसोदा देवकी सतगुरू,
नन्द बसुदेव जब प्रेम आया ॥
जीव औ ब्रह्म सी कृस्न बलदेव जी,
कंस हंकार को मारि नाया ।
बिबेक बृंदाबन छिमा को कदम है,
गऊ औ ग्वाल जिय बीच दाया ॥
सनेह की राधिका सील की गोपिका,
तत्त माखन लिहे छीनि खाया ॥
ध्यान सिर मुकुट धै सबद की काछनी,
कछे है लालजी रहस छाया ॥
लगन के कुंज में मगन गोपालजी,
टेर के सुनत आनंद धाया ।
दास पलटू कहै गगन के बीच में,
नाद की बाँसुरी सोर लाया ॥६२॥

भक्त से द्रोह करि कोऊ ना बचा है,
किया जिन द्रोह सो सबै हारा।
पंडवा पाँच जिताय भारत कहै,
गहा गज ग्राह जल बीच मारा॥
गये दुरबासा अंबरीख ब्रत टारने,
छुटा है गैब से चक्र धारा।
दास पलटू कहै हेत प्रह्लाद के,
खंभ को फोरि कै उद्र[1] फारा॥६३॥

सील की अवध सनेह का जनकपुर,
सत्त की जानकी ब्याह कीता।
मनहिं दुलहा बने आपु रघुनाथजी,
ज्ञान के मौर सिर बाँधि लीता॥
प्रेम बारात जब चली है उमँगि कै,
छिमा बिछाय जनवाँस दीता।
भूप हंकार के मान को मर्दि कै,
धीरता धनुस को जाय जीता॥
सुरति औ सबद मिलि पाँच भँवरी फिरे,
माँग सेंदुर दिहा राग बीता।
संतोष दै दायजो[2] तत्त पुष्पांजली,
जनकजी बुद्धि बिनवंत[3] कीता॥
किहा है बिदा यह दिहा आसीस है,
लोभ औ मोह से रहौ रीता।
दसएँ महल पर अवधपुर कोहबरे[4],
दास पलटू सूतै राम सीता॥६४॥

(१) पेट। (२) दहेज। (३) विनय। (४ देव मित्र का घर।

बाम्हन तो भये जनेउ को पहिरि कै,
बाम्हनी के गले कुछ नाहिं देखा।
आधी सूद्रिन रहै घरै के बीच में,
करै तुम खाहु यह कौन लेखा॥
सेख की सुन्नति से मुसलमानी भई,
सेखानी की नाहिं तुम कहो सेखा।
आधी हिन्दुइनि रहै घरै के बीच में,
पलटू अब दुहुन के मारु मेखा॥९५॥

सुन्य के सिखर पर अजब मंडप बना,
मन औ पवन मिलि करै बासा।
एक से एक अनेक जंगल जहाँ,
भँवर गुंजार इक भरै स्वासा॥
नाम सागर भरा झिलमिलि मोती झरै,
चुनै कोइ प्रेम-रस हंस खासा।
दास पलटू परै जबै दिब दृष्टि में,
जरै सब भर्म तब छुटै आसा॥९६॥

नासूत मलकूत जबरूत माना,
लाहूत की लज्जत जाय चक्खा।
लामकान पर बैठि के जी,
रोसन जमीर फक्कीर पक्का॥
असमान खाना खुलि गया,
दिल रूह बोलै हका हका[1]।
पलटूदास कहै मुझे नजर आवै,
हर वक्त चिहार[2] तरफ मक्का॥९७॥

---

(१) लामकान या सत्यलोक की धुन। (२) चारों।

कनफटा सिरजटा नखो ठाढ़े सुरी,
सैयद सेख दुरवेस हाजी ।
मौनी जलसैनी पँचअगिन जे तापते,
करैं उपवास फिर खायँ भाजी ॥
जोगी औ जती पौहारी ऊरध-मुखी,
माया के कारन सब दगाबाजी ।
दास पलटू कहै झूठ से दूर है,
एक ही साच में राम राजी ॥९८॥
तुरुक लै मुर्दा को कब्र में गाड़ते,
हिन्दू लै आग के बीच जारें ।
पूरब वे गये हैं वे पच्छूँ को,
दोऊ बेकूफ[1] ह्वै खाक टारैं ॥
वे पूजैं पत्थर को कबर वे पूजते,
भटक के मुए दै सीस मारैं ।
दास पलटू कहै साहिब है आप में,
आपनी समझ बिनु दोऊ हारैं ॥९९॥

झूलना

॥ गुरुदेव ॥

सतगुरु साहिब जब मिहर करी,
तब ज्ञान का दीपक बारा है जी ।
भर्म अँधेरा छूटि गया,
दसहुँ दिसि भा उजियारा है जी ॥
रैन दिवस[2] टूटै नाहीं,
लागी ज्यों तेल की धारा है जी ।

---

(१) मूर्ख । (२) दिन रात, निरंतर ।

पलटू कहै मोहिं दीख परा,
घट घट में ठाकुरद्वारा है जी ॥ १ ॥
सतगुरु ऐसा तलास कीजै,
ज्यों सिकलीगर का मसकला ।
तुरत जौहर निकारि देवै,
इक लहमा पकरि के खूब मला ॥
दिल का मुरचा सब दाग छुटा,
तरवार बनी ज्यों झलझला ।
पलटू नामर्द से मर्द हुआ,
तब बाँधि तरवार सिपाह चला ॥ २ ॥
कटाच्छ के हमरी ओरि ताको,
सतगुरु करो दाया है जी ।
जड़ चेतन दोउ लागि रहे,
जबर तेरी माया है जी ॥
कुछ जोग जुगत बतलाय दीजै,
जा से सोधौं मैं काया है जी ।
पलटू तुम दीनदयाल बड़े,
सतगुरु सेतो सब पाया है जी ॥ ३ ॥
पूरब पुन्न भये परगट,
सतसंग के बीच में जाय परी ।
आनंद भयो जब संत मिले,
वही सुभ दिन वहि सुभ घरी ॥
दरसन करत त्रय ताप मिटे,
बिनु कौड़ी दाम में जाय तरी ।
पलटू आवागवन छुटा,
रज चरनन की जब सीस धरी ॥ ४ ॥

पराई चिता की आगि महैं,
दिन राति जरै संसार है जी।
चौरासी चारिउ खान चराचर,
कोऊ न पावै पार है जी॥
जोगी जती तपी सन्यासी,
सब को उन डारा जारि है जी।
पलटू मैं हूँ जरत रहा,
सतगुरु लीन्हा निकारि है जी॥ ५॥

॥ नाम ॥

इक नाम अमोलक मिलि गया,
परगट भये मेरे भाग हैं जी।
गगन की डारि पपिहा बोलै,
सोवत उठी मैं जागि हौं जी॥
चिराग बरै बिनु तेल बाती,
नहिं दीया नहिं आगि है जी।
पलटू देखि के मगन भया,
सब छुट गया तिर्गुन दाग है जी॥ ६॥

॥ सर्व व्यापक ॥

हम ने यह बात तहकीक किया,
सब में साहिब भरपूर है जी।
अपनी समुझ कुआँ के पानी,
क्या नियरे क्या दूरि है जी॥
गाफिल को ओर से सोइ गया,
चेतन को हाल हजूर है जी।
पलटू इस बात को नहिं मानै,
तिस के मुँह में परै धूर है जी॥ ७॥

॥ संत और साध ॥

बादसाह का साह फकीर है जी,
नौबत गैब का बाजता है।
ज्ञान ध्यान की फौज को साधि के जी,
सबर के तख्त पर गाजता है॥
लाहूत[१] खजाना मारफत का,
सिर नूर का छत्र बिराजता है।
पलटू फकीर का घर बड़ा,
दीन दुनियाँ दोऊ भीख माँगता है॥ ८ ॥

अनुभै परगास भया जिस को,
तिस ही की बात प्रमान है जी।
भीतर के सब खुलि गये पट,
पक्का उसी का ज्ञान है जी॥
खिल लोक प्रविर्ति को बात कहै,
वा का तेज कैसा जैसे भान[२] है जी।
पलटू जगत से पीठि देवै,
नहिं संत होना औसान[३] है जी॥ ९ ॥

सील सनेह सीतल बचन,
यही संतन की रीति है जी।
सुनत के प्रान जुड़ाय जावै,
सब से करते वे प्रीति हैं जी॥
चितवनि चलनि मुसक्यानि नवनि,
नहिं राग दोष हारि जीति है जी।
पलटू छिमा संतोष सरल,
तिन को गावै स्रुति नीति है जी॥१०॥

---

(१) शून्य। (२) सूरज। (३) सहज।

आसिक इसक पर जो भये,
वे नहिं चाहैं करामात है जी।
उन को सोरसार नहीं भावै,
वे मस्त रहैं दिन रात है जी॥
नहिं भूख लागै नहिं नींद आवै,
नहिं पीवत हैं नहिं खात हैं जी।
पलटू हम बूझि बिचारि देखा,
वही साहिब की जाति हैं जी॥११॥
राजा रंक को एक जानै,
तिसी का नाम फकीर है जी।
कंचन औ काच में भेद नहीं,
लखै और की पीर है जी॥
सादी गमी कुछ एक नहीं,
संतोष का मुलुक जगीर है जी।
पलटू अस्तुति निंदा एकै,
सोई रोसन-जमीर[1] है जी॥१२॥
जंगल के बीच मंगल करै,
किसी की नहिं परवाह है जी।
सबर के तख्त पर जाय बैठा,
अजब फकीर बादसाह है जी॥
चाहना की एक राह मूँदी,
सौ ओर से निकरी राह है जी।
पलटू परालबध मोदी भई,
वोही करती निरबाह है जी॥१३॥
कोइ जोग जुगत की साधन में,
कोई बैराग ले ढूँढ़ता है।

(१) अंतरयामी।

कोइ साखी सबद बनाय कहै,
जोरि जोरि बैठि के गूँथता है ॥
कोइ भाँग धतूरा खाइ के जी,
गुफा में बैठि के झूमता है।
कोइ बेद पुरान सिद्धांत पढ़ै,
कोइ बैठि के निर्गुन गूनता है ॥
कोइ उदासी बनि बन बन फिरै,
कोइ घायल होइ के घूमता है।
पलटू फकीर की राह जुदी,
इन बातों के ऊपर थूकता है ॥१४॥
कवायद असमान के बीच होवै,
दिल फहम से मारि गिरावता है।
बंदूक हवा करि दीठ गोली,
दम को साधि चलावता है ॥
गूमठ[१] में जब जाय लगा,
मुराकबे[२] नजरि में आवता है।
खिड़की पार जब निकरि गया,
पलटू दुरवेस कहावता है ॥१५॥

॥ गुप्त ॥

दीद बर दीद नजर आवै,
तिस को साच करि जानिये जी।
इस दिल सेती फहम[३] करै,
उस को तब जाइ पहिचानिये जी ॥
इस दिल की रूह असमान मँहै,
लाहूत के बीच में आनिये जी।

(१) गुम्बज। (२) ध्यान। (३) समझ।

पलटू ना जाहिर बात करै,
उसकी बात को मानिये जो ॥१६॥

॥ वैराग ॥

धरम करम सब छोड़ि दिया,
छोड़ी जगत को आस है जी।
और कछु अब नहिं भावै,
संतन के संग बिलास है जी ॥
अस्तुति निन्दा को पीठि दिया,
सनमुख सबद में बास है जी।
पलटू अधोमुख कूप मंहै,
दीया जरै आकास है जी ॥१७॥
पाँच भूत जो बस्सि किया,
तो का लै राम को करना जी।
आपुइ वह रामजी होइ गया,
जियत भया जब मरना जी ॥
संसार कंहै जब पीठि दिया,
तब का संसार से तरना जी।
पलटू जब इन्द्री बस्सि किया,
तब का मुक्तो लै करना जी ॥१८॥

॥ सतसंग ॥

भूले मन को समुझाय लीजे,
सतसंग के बीच में जाइ के जी।
अब की बेर नहिं चूकना है,
सुन्दर मानुष तन पाइ के जी ॥
ज्ञान ध्यान को बात को बूझि लीजे,
मन में कुछ ठीक ठहराइ के जी।

पलटू गगन के बीच मारै,
सुरति कमान चढ़ाइ के जी ॥१६॥

चढ़ी नाम भाठी चुवै प्रेम प्याला,
पीना सोई सराब है जी।
मजलिस दुर्वेस की मतवारी,
जिकिर[1] खाना कबाब है जी॥
साहिब मासूक आसिक बंदा,
नमक में जैसे आब है जी।
पलटू खुदाय की राह यही,
और करना अजाब है जी ॥२०॥

॥ भेष ॥

संतन के बीच में टेढ़ रहैं,
मठ बाँधि संसार रिझावते हैं।
दस बीस सिष्य परमोधि लिया,
सब से वह गोड़ धरावते हैं॥
संतन की बानी काटि के जी,
जोरि जोरि के आपु बनावते हैं।
पलटू कोस चार के गिर्द में जी,
सोइ चक्रवती कहलावते हैं ॥२१॥

॥ चितावनी ॥

पैदा भया मुट्ठी बाँधे,
फिरि हाथ पसारे जायगा जी।
जने चारि के काँधे चढ़ि चाले,
आखिर को फेरि पछितायगा जी॥

(१) सुमिरन।

दुनियाँ दौलत इहाँ छूटै,
उहाँ मार घनेरी खायगा जी।
पलटू जब बूझि है धरमराजा,
उहाँ तब क्या बतियायगा[1] जी ॥२२॥

॥ बिरह ॥

सच्चे साहिब के मिलन को,
मेरा मन लीहा बैराग है जी।
मोह निसा[2] में सोय गई,
चौंक परी उठि जाग है जी॥
दोउ नैन बने गिरि के झरना,
भूषन बसन किया त्याग है जी।
पलटू जीयत तन त्यागि दिया,
उठी बिरह की आगि है जी ॥२३॥

॥ प्रेम ॥

सोरहो सिंगार बनाइ कै जी,
झमकि झमकि चली प्यारी।
सजन के रूप को देखि कै जी,
झुकि झुकि परै जस मतवारी॥
तन मन की सुधि सब जाति रही,
हिये में लगी प्रेम चोट भारी।
पलटू जान्यो मैं आपु को जी,
अभिगति की है इक गति न्यारी ॥२४॥
लगन जिसी से लागि रही,
काज उसी से सरा है जी।
सब लोक की लाज को तोरि डारे,
उसी के घर करो डेरा है जी॥

---

(१) बोलैगा। (२) रात।

मेरे मन में कुछ डर नाहीं,
हँसेगा लोग बहुतेरा है जी।
पलटू घूँघट को खोलि डारो,
समरथ सतगुरु का चेरा[1] है जी ॥२५॥
साहिब के दास कहाय यारो,
जगत की आस न राखिये जी।
समरथ स्वामी को जब पाया,
जगत से दीन न भाखिये जी ॥
साहिब के घर में कौन कमी,
किस बात को अंतै आखिये जी।
पलटू जो दुख सुख लाख परै,
वहि नाम सुधा रस चाखिये जी ॥२६॥
पहिले संसार से तोरि आवै,
तब बात पिया की पूछिये जी।
तरवार दुइ ठो है म्यान एकै,
किस भाँति से वा में कीजिये जी ॥
मीठे प्याले को दूर करौ,
करू[2] प्रेम पियाला पीजिये जी।
पलटू जब सीस उतारि धरै,
तब राह पिया की लीजिये जी ॥२७॥

॥ सूरमा ॥

फहम की फौज बनाइ के जी,
सुरति कमान चढ़ाइ लीता।
बख्तर प्रेम का पहिनि के जी,
गम[3] फील सबर निसान कीता ॥

(१) टहलुआ। (२) कड़वा। (३) शोक।

आकिल के बान छुड़ाइ के जी,
दुर्मति के दल को मारि लीता।
खुदी खूब कुफर को मारि के जी,
पलटू दुरवेस मैदान जीता ॥२८॥

॥ मन ॥

उसी सावज[१] को मारना जी,
न हाड़ न माँस न चाम स्वासा।
पूँछ न पाँव न मुख वा के,
उसी का सालन बनै खासा॥
मुरदा के मारे वह मरै,
जीवत बधिक की नाहिं आसा।
पलटू जो सावज मारि खावै,
तिसी का आवागवन नासा ॥२९॥

बनिया यह बानि[२] ना छोड़ता है,
फिर फिर पसँगा मारता है।
केतक बार तैं चोट खाया,
उस याद को फेर बिसारता है॥
खारी के बीच में खाँड़ डारै,
दुरमति को नाहिं मिटावता है।
पलटू केता समझाय देखा,
तिस पर भी नाहिं सम्हारता है ॥३०॥

बिन मूल के झाड़ इक ठाढ़ि रहा,
तिस पर आ बैठे दुइ पच्छी।
इक तो गगन में उड़ि गया,
इक लाय रहा बकु ध्यान मच्छी॥

(१) शिकार। (२) आदत।

गगन में जाइ के अमर भया,
वह मरि गया चारा जिन भच्छी।
पलटू दोऊ के बीच खेलै,
तिहि बात है आदि अनादि अच्छी ॥३१॥

माया संसार को जीति आई,
संसार चला सब हारि है जी।
जोगी जती औ सिद्ध तपी,
उनको भी लेती मारि है जी ॥
उनके निकट नहीं आवै,
जिनके बिबेक बिचारि है जी।
पलटू संतन से वह डरती,
वे फेंकि मारैं पैजारि[१] है जी ॥३२॥

मोटी माया तो सब तजै,
मैंहीं नहीं तजि जाति है जी।
ओही उनकी खोराक भई,
मोटे रहै दिन राति है जी ॥
पलटू जो मैंहीं माया तजै,
वोही साहिब की जाति है जी ॥३३॥

॥ उपदेश ॥

जक्त की प्रीति को देखि लिया,
नाहक को लोग ठगात हैं जी।
स्वारथ के हेतु से प्रीति करैं,
दौलत बेटा मँगात हैं जी ॥
लम्बी दंडवतैं आप करैं,
दगाबाज की प्रीति कहात है जी।

(१) जूती।

पलटू इन से सम्हारि रहौ,
तेरे मन को चोर लगात है जी ॥३४॥
इलम पढ़ा पर अमल नहीं,
अमल बिनु इलम खाक है जी।
इलम पढ़ै औ अमल करै,
उसके हम तो मुस्ताक हैं जी ॥
बेहद्द कथै औ हद्द रहै,
उसका तो मुँह नापाक है जी।
पलटू गुफ्तन सोई दीदन,
वह तो मारफत की नाक है जी ॥३५॥
स्यार की चाल को छोड़ बे बालके,
आपु को खूब दरिआफ[1] कीजै।
सिंह है तुही तहकीक कर आप में,
स्यार के संग को छोड़ दीजै ॥
अहार तो कीजिये आपु से मारिकै,
और कै मारा ना कधो लीजै।
पलटू तू सिंह है गरज बे हाँक दै,
पकरि गजराज धै पाँव मींजै ॥३६॥
दुनिया कँहै जब तरक[2] किया,
कुछ दीन[3] की लज्जत टोवना है।
काम क्रोध पकरि कै मारि डारौ,
खुदी खूब के ताईं खोवना है ॥
यारो इस बात की लाज करौ,
संतोष का तोसा पोवना[4] है।

(१) दरियाफ़्त = निश्चय। (२) त्याग। (३) परमार्थ। (४) तैयार करना, जैसे रोटी पोते हैं।

पलटू साहिब के घर माहीं,
　　टुक पाँव पसारि के सोवना है ॥३७॥
पहिले फना[1] फिर सेख होवै,
　　कदम मुरसिद को पाइ के जी।
तब फना फिल्लाह होवै,
　　मारफत मकान ठहराइ के जी॥
मुरसिद मुरीद पर मिहर करै,
　　लाहूत को देइ पहुँचाइ के जी।
पलटू हूहू आवाज आवै,
　　रूह खास दीदन[2] उहाँ जाइ के जी॥३८॥

॥ उपदेश भेष को ॥

संग्रह त्याग दोऊ को छोड़ि देवै,
　　तब बात पड़ैगी ठीक है जी।
अस्तुति निन्दा काँच कंचन में,
　　भेद राखै नहि नेक है जी॥
चार बरन आसरम धरम,
　　ये भी गाड़ी की लीक हैं जी।
पलटू सब सेती जुदा रहै,
　　येही बात तहकीक है जी॥३९॥
घर घर से चुटकी माँगि के जी,
　　छुधा को चारा डारि दीजै।
फूटा इक तुम्बा पास राखौ,
　　ओढ़न को चादर एक लीजै॥
हाट बाट महजित में सोय रहौ,
　　दिन रात सतसंग का रस पीजै।

(१) मृत, मुर्दा। (२) दर्शन कर।

पलटू उदास रहौ जक्त सेती,
पहिले बैराग यहि भाँति कीजै ॥४०॥
बासी टुकड़ा को माँगि खाना,
महजित के बीच में सोवना जी।
ऊपर इक चिथरा ओढ़ि लेना,
अंदर को साफ करि धोवना जी॥
दिल में आवै सो कहि देना,
उस बात को नाहीं गोवना[1] जी।
पलटू गुजर गुजरान गई,
सिर खोलि के फिर क्या रोवना जी ॥४१॥

॥ आपा ॥

हमता ममता को दूरि करै,
यही तो मूल जंजाल है जी।
चाह अचाह को छोड़ि देवै,
यहि सहज सुभाव की चाल है जी॥
मोर औ तोर विकार छूटै,
सब से मिलै हर हाल है जी॥
पलटू जिन बासना बीज भूना,
वोही साहिब का लाल है जी ॥४२॥
मेरी मेरी तू क्या करै,
मेरी मंहे अकाज है जी।
साहिब सब काम सँभारि लेवै,
मेरी से आवै बाज[2] है जी॥
जिसका तू दास कहावता है,
तिसको इस बात की लाज है जी।

(१) छिपाना। (२) बाज आना=छोड़ देना।

पलटू तू मेरी छोड़ि देवै,
तीनि लोक तेरा राज है जी ॥४३॥
हवा कंहै खामोस[१] करै,
नाक आँख कान मुख मूदि भाई ।
तब नूर तजल्ली[२] दीद करै,
असमान कि खिरकी खोलि नाई[३] ॥
खिरकी की राह निकरि जावै,
सुनै हक हक आवाज पाई ।
पलटू दीगर को नेस्त[४] करै,
होय खुद अहद[५] इस भाँति जाई ॥४४॥
जब मैं नाहीं तब वह आया,
मैं ना वह यह कौन मानै ।
गूँगे ने गुड़ खाइ लिया,
जबान बिना क्या सिफत आनै[६] ॥
दरियाव औ लहर तो दोय नहीं,
समा[७] औ रौसनी कौन छानै ।
पलटू भगवान की गति न्यारी,
भगवान की गति भगवान जानै ॥४५॥

॥ दीनता ॥

साहिब मोर कुछ एक नाहीं,
जो है सो सब कुछ तोर है जी ।
मुझको इस बात की नाहिं खबर,
आगे परा मुझे भोर[८] है जी ॥

(१) चुप करै अर्थात् रोकै । (२) प्रकाश । (३) डाली । (४) दुई [दीगर] को दू[र]
[नेस्त] करै । (५) एक । (६) तारीफ़ करै । (७) आकाश । (८) भूल ।

इस हमता ममता के कारन,
तुम से भये हम चोर हैं जी।
पलटू अब मुझको चेत परा,
तेरा नहिं कहै मन मोर है जी ॥४६॥

बड़ा भया तौ क्या भया,
जो दिल का नाहिं उदार है जी।
बड़ा सब से समुद्र भया,
पानी पड़ा वो खार है जी ॥
समुद्र सेती इक कूप भला,
पिये सकल संसार है जी।
पलटू सबसे छोट भया,
सोई सब का सिरदार है जी ॥४७॥

पात पात कै आपा लुटाय देवै,
पाछे फूलै परास है जी।
कदली बाँस मंहै जब फर लागा,
फिर नहिं कुछ उस की आस है जी ॥
जियत मरै तन त्यागि देवै,
सहै जगत उपहास है जी।
पलटू पहिले यह करि लेवै,
तब जाय सतगुरु के पास है जी ॥४८॥

जाय संत सेवा में लागि रहै,
यही धर्म जिग्यास है जी।
तन मन सेती जब नाहिं टरै,
करै चरन में बास है जी ॥
दीन-दयाल हैं संत बड़े,
जो पुजवैं मन की आस है जी।

पलटू जो संत उपदेस करैं,
सोई कीजै बिस्वास है जी ॥४६॥

॥ ज्ञान ॥

जिस चोट लगी है ज्ञान की जी,
तिस को नहीं कुछ भावता है।
अठ सिसि नौ निधि भईं आइ खड़ी,
तिस को वह दूरि बहावता है॥
संसार कंहै दै पीठि बैठा,
अपने मन को खूब रिझावता है।
पलटू जहँ मन की गम्मि नहीं,
तहाँ वह जोति जगावता है॥५०॥

कर्म बिना नहिं ज्ञान होव,
कर्म कंहै नहिं निंदिये जी।
फल कारन ज्यों झाड़ फूलै,
फूल झरि जाय फल लीजिये जी॥
पाछे सेती बेटा होवै,
पहिले मुसक्कत कीजिये जी।
पलटू पहिले जब ऊख बोवै,
पाछे सेती रस पीजिये जी॥५१॥

जो गया साहिब के खोजने को,
सो आपे गया हेराय है जी।
समुँदर के बीच में बुंद परा,
उसी में गया समाय है जी॥
पानी लहरि लहरि पानी,
को भेद सकै अलगाय है जी।

पलटू हरफ मसी[1] दोय दोय नाहीं,
यह बात ले ठोक ठहराय है जी ॥५२॥

॥ मुक्ति ॥

मुक्ति मुक्ति सब खोजत है,
मुक्ति कहो कहँ पाइये जी।
मुक्ति के हाथ औ पाँव नहीं,
किस भाँति सेती दिखलाइये जी ॥
ज्ञान ध्यान की बात बूझिये,
या मन को खूब समझाइये जी।
पलटू मूए पर किन्ह देखा,
जीवत ही मुक्त हो जाइये जी ॥५३॥

॥ भेद ॥

उठै झनकार गगन के बीच में,
लगा दिन राति इक रंग है जी।
टूट तहँ लगी है सुरति और निरति की,
तान गावै सबद सोहंग है जी ॥
सहज के खेल में जोति हीरा बरै,
नहीं कोइ दूसरा संग है जी।
पलटू महल अठएँ ऊपर गई,
हवास देखि के दंग[2] है जी ॥५४॥
उस देस की बात मैं कहता हूँ,
असमान के बीच सुलाख है जी।
बादसाह उसी के बीच बैठा,
सूझि परै बिनु आँख है जी ॥

(१) सियाही। (२) हक्का बक्का।

सुरुख तो उसका चिहरा है,
आफ़ताब तसद्दुक लाख है जी[१]।
पलटू वहँ हूहू अवाज आवै,
उसमें मेरा दिल मुस्ताक है जी ॥५५॥
प्रतिबिंब अकास को देखा चहै,
भरै घट में उस का भास है जी।
उसी घट को फिर फोरि डारै,
आखिर को रहै अकास है जी॥
इस भाँति से जड़ सरीर मंहै,
चेतन करै परगास है जी।
पलटू सरीर का नास होवै,
चेतन का नाहीं नास है जी ॥५६॥
अपने सरूप को जिन्ह पाया,
वह जाय रहा भव पार है जी।
असाध को साधि चेतन्न किया,
भीतर बाहर उजियार है जी॥
जीव ब्रह्म की गाँठि को खोलि डारा,
निरवार लिया सब सार है जी।
पलटू कुछ भूख पियास नहीं,
उसी नाम का एक अधार है जी ॥५७॥
उस घर का भेद न कोउ जानै,
जहवाँ सेती जिव आवता है।
सब खोजत खोजत मूए[२] गये,
उस घर का भेद न पावता है॥

(१) त्रिकुटी का धनी जिसका रक्त वर्ण है और जिसके तेज पर लाखों सूरज न्योछावर हैं। (२) मर।

अधबीच सेती सब लोग फिरे,
उक्की सेती ठहरावता है।
पलटू हम ने तहकीक किया,
सब और का और बतावता है ॥५८॥

॥ पंडित ॥

बेद पुरान पंडित बाँचै,
करता अपनी दूकान है जी।
अरथ को बूझि के टीका करै,
माया में मन बिकान है जी ॥
औरन को परमोध करै,
खाली अपना मकान है जी।
पलटू कागद में खोजत है,
साहिब कहीं लुकान है जी ॥५९॥

॥ निंदक ॥

और को मैं नहिं जानत हौं,
निंदक साहिब मेरा है जी।
जिन्ह ने मेरी नजात[1] किया,
करौं कदम में डेरा है जी ॥
धोबी होय करि साफ करै,
ऐसा गुरू हम हेरा है जी।
पलटू उन्हें दंडोत करै,
वोही साहिब हम चेरा हैं जी ॥६०॥

संतन की निंद[2] न कीजिये जी,
संतन की निंद में नाहिं भला।
चौरासी भोग वह भोगि आया,
चौरासी भोगन फेरि चला ॥

(१) उद्धार। (२) निंदा।

संतन को कुछ परवाह नहीं,
अपने पाप सेती वह आप जला।
पलटू उस का जो मुँह देखै,
तिस का भी मुँह फिर होय काला ॥६१॥

॥ मिश्रित ॥

भजनीक जो होय सो भजन करै,
भजनीक के बीच में हम नाहीं।
भजन में जाइ के बैठि रहे,
अब कौन करै आवा जाही॥
लोन की डेरी[1] फिर कौन खावै,
जब जाय परी वह सिंधु माहीं।
पलटू कहकहा[2] जिन्ह झाँका,
उन को अब आवना क्या चाही ॥६२॥
द्वादस आँगुर बैठे चलै,
चलत अठारह जाय है जी।
सूते के ऊपर तीस आँगुर,
चौंसठि मैथुन को थाह है जी॥
जती तपी की आठ आँगुर,
जोगी की चारि ठहराय है जी।
जिस के भीतर बाहर नाहीं,
तेहि काल कधी नहिं खाय है जी॥
पलटू आठ अँगुर जाय भीतर को,
वा की देह नहीं नसाय है जी ॥६३*॥

(१) डला। (२) एक दीवार कहानी की जिसका होना चीन देश में मशहूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दीख पड़ता है और ऐसा हर्ष होता है कि हँसी के मारे देखनेवाला बेइख़्तियार होकर उधर कूद कर ग़ायब हो जाता है।

*बैठने में जीव की स्वासा बारह अंगुल, चलने में अठारह, सोने में तीस, मैथुन में चौंसठ, जती की आठ और जोगी की चार अंगुल बाहर को जाती है परन्तु पूरे अभ्यासी का स्वासा आठ अंगुल भीतर को जाती है।

भूत पिसाच जो पूजत हैं,
फिर फिर होवैं वे भूत है जी।
भूत जोनि भरमत फिरैं,
उनका वही आकूत है जी॥
गुबरैला फूल पै ना बैठे,
वो जा बैठे गुह मूत पै जी।
पलटू कुल रीति नहीं छोड़ै,
जहाँ बाप गया तहाँ पूत है जी॥६४॥

पंडित अच्छर को बूझि गया,
फिर नहिं पोथी वह बाँचैगा।
भिच्छुक सेती बादसाह भया,
वह नहिं भिच्छा को जाचैगा[१]॥
मूरति की सूरति आप भया,
मूरति आगे क्या नाचैगा।
पलटू जगत की चाल भूलै,
जब अपने रंग में राचैगा॥६५॥

चोर साह का काला मुँह करिके,
जंगल के बीच में सोवना जी।
चुप चाप अकेले बैठि रहना,
दिन रात काया को सोधना जी॥
जहँ बापु माई की गम्म नहीं,
रोवना नाहीं हसना जी।
पलटू जगत से दूरि रहो,
जान बूझि नाहक क्यों फँसना जी॥६६॥

(१) माँगैगा।

चला चली की राह मंहै,
भली भला कुछ कीजिये जी।
आखिर को मरना ठीक हुआ,
दुख नाहिं किसी को दीजिये जी॥
जिस में परस्वारथ होय सकै,
उस ज्ञान को घोरि के पीजिये जी।
पलटू कारिख को धोय डारै,
चंदन का टीका लीजिये जी ॥६७॥

दुरवेस उधर की बात कहौ,
जिस से हुआ दुरवेस है जी।
कौन चीज तू देखि आया,
सो बात कहौ संदेस है जी।
काला पियरा या सुरख देखा,
केहि रँग कौने भेष है जी॥
पलटू वह मेरा पीर भाई,
जिन्ह जाय देखा वह देस है जी ॥६८॥

॥ अरिल ॥

॥ गुरुदेव ॥

तिरगुन रोग प्रचंड जगत सब मरि गया।
औषद पीसै करम कारगर ना भया॥
अधिक सधिक गरुवाय दुक्ख लिये खोयगा।
अरे हाँ पलटू सतगुरु मिलै जो बैद नीक तब होयगा ॥१॥

॥ नाम ॥

जो कोइ चाहै नाम तो नाम अनाम है।
लिखन पढ़न में नाहिं निअच्छर काम है॥

रूप कहौ अनरूप पवन अनरेख ते ।
अरे हाँ पलटू गैब दृष्टि से सन्त नाम वह देखते ॥२॥
नाम डोरि है गुप्त कोऊ नहिं जानता ।
निःअच्छर निःरूप दृष्टि नहिं आवता ॥
ररंकार आकार पवन को देखना ।
अरे हाँ पलटू देखत हैं इक संत और सब पेखना[1] ॥३॥

॥ शब्द ॥

फूटि गया असमान सबद की धमक में ।
लगी गगन में आग सुरति की चमक में ।
सेसनाग औ कमठ लगे सब काँपने ।
अरे हाँ पलटू सहज समाधि कि दसा खबरि नहिं आपने ॥४॥

॥ सत्य ॥

पुरजे पुरजे उड़ै झूठ भरि[2] ना कहै ।
साहिब के घर बीच झुठाई ना लगै[3] ॥
त्यागै तन की आस कसौटी खरी है ।
अरे हाँ पलटू तब रीझैगा राम भक्ति क्या परी[4] है ॥५॥

॥ संत और साध ॥

संत भये बादसाह गैब के तखत पर ।
छत्र फिरै हरिनाम किहा तिहु लोक सर[5] ॥
अरे हाँ पलटू नौबति आठो पहर गगन में झरी है ॥६॥
सब में बड़े हैं संत दूसरा नाम है ।
तिसरे दस औतार तिन्हैं परनाम है ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस सकल संसार है ।
अरे हाँ पलटू सब के ऊपर संत मुकुट सरदार है ॥७॥

---

(१) डिम्भ । (२) मात्र । (३) चलै । (४) गिरी पड़ी है या मारी मारी फिरती है । (५) जेर ।

जीवन है दिन चार भजन करि लीजिये ।
तन मन धन सब वारि संत पर दीजिये ॥
संतहि से सब होइ जो चाहै सो करैं ।
अरे हाँ पलटू संग लगे भगवान संत से वे डरैं ॥८॥

ऋद्धि सिद्धि से बैर संत दुरियावते ।
इन्द्रासन बैकुंठ बिष्टा सम जानते ॥
करते अबिरल[1] भक्ति प्यास हरि नाम की ।
अरे हाँ पलटू संत न चाहैं मुक्ति तुच्छ केहि काम को ॥९॥

जिन्ह के ज्ञान बैराग भक्ति में प्रीति है ।
रहनी कहनी एक हार ना जीति है ॥
संतोषी निरवृत्ति भजन पर सिर दिया ।
अरे हाँ पलटू सबद बिबेकी संत आतमा बसि किया ॥१०॥

आगम कहैं न संत भड़ेरिया कहत है ।
संत न औषधि देत बैद यह करत है ॥
झार फूँक ताबीज ओझा को काम है ।
अरे हाँ पलटू संत रहित परपंच[2] राम को नाम है ॥११॥

मोह माया त्यागि जगत से भगे हैं ।
करि इन्द्री का दमन भजन में लगे हैं ॥
ज्ञान बिबेक बिचार रहनि में रहत हैं ।
अरे हाँ पलटू हरि संतन की बात ऊधो से कहत हैं ॥१२॥

केहू भेष में नाहिं रहैं अड़बंग[3] है ।
देवे मंहै कुसाद[4] खाय में तंग है ॥
जग से रहै उदास मरहमी[5] अंत के ।
अरे हाँ पलटू ऐसी रहनि रहै सो लच्छन संत के ॥१३॥

---

(१) निरंतर । (२) इन झगड़ों से अलग । (३) बेपरवाह । (४) दूसरों के देने में उदारता और अपने खर्च में तंगी । (५) भेदी ।

बिगत राग[1] जो होय ज्ञान में चक्कवै।
तुरिया से आतीत भजन में पक्कवै॥
रहनी गहनी एक सबद पहिचानिये।
अरे हाँ पलटू ऐसा जो कोइ होय गरू करि मानिये॥१४॥

आसन दृढ़ जो होय नींद आहार में।
अठएँ लोक की बात कहै टकसार में॥
आठौ पहर असोच रहै दिल खुसी पर।
अरे हाँ पलटू तन मन धन सब वार डारिहौं उसी पर॥१५॥

दुख सुख संपति बिपति मान अपमान है।
सत्रु मित्र भूपाल सो एक समान है॥
कनक काँच ना भेद ज्ञान में तिच्छना[2]।
अरे हाँ पलटू ऊधो से हरि कहैं संत के लच्छना॥१६॥

संत हमारे प्रान रहौं मैं साथ में।
तीन लोक सब रहै संत के हाथ में॥
मोहूँ डारैं बेचि उजुर मैं ना करौं।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधो से कहैं संत से मैं डेरौं॥१७॥

संत हमारी देह और ना कोऊ है।
ढरै पसीना संत ढरै मोर लोहू है॥
दोनों एक सरीर देखत कै दुइ धरौं।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधो से कहैं दुष्ट राई करौं॥१८॥

संत का मैं संत मोर अंतर ना तनिक है।
संत बिना मैं जैसे फनि[3] बिनु मनि कहै॥
लछमी मोर सरीर सो दासी संत की।
अरे हाँ पलटू हरि ऊधो से कहैं बात यह तंत की॥१९॥

(१) कामना से रहित। (२) निपुन, चोकस। (३) साँप।

तिल को तेल बसाय फूल के संग में ।
सलिता गंगा होत परै जब गंग में ॥
लोहा कंचन होय पारस के परस से ।
अरे हाँ पलटू मूरख कथते ज्ञान संत के दरस से ॥२०॥

॥ भक्त जन ॥

संतन किया बिचार पुजबे को देय है ।
की हरि की हरि भक्त और ना कोय है ॥
सब देवन के देव बड़े तिहुँ काल में ।
अरे हाँ पलटू और देव को पूजि परै जंजाल में ॥२१॥
हरि जन हरि हैं एक सबद के सार में ।
जो चाहैं सो करैं सन्त दरबार में ॥
तुरत मिलावैं नाम एक ही बात में ।
अरे हाँ पलटू लाली मेंहदी बीच छिपी है पात में ॥२२॥
जो तू चाहे नाम बैठु सतसंग में ।
संत मिला जो होय केहू के रंग में ॥
उन से सब कछु होय फलै में फूल है ।
अरे हाँ पलटू हरि जन हरि में रहै बास ज्यों फूल है ॥२३॥

॥ बैराग ॥

तुरी अठारह लाख अमीरी बलख की ।
दिया मर्द ने छोड़ आस सब खलक की ॥
चिथरा पहिरि लँगोटी साका[1] कै गया ।
अरे हाँ पलटू रहा अखाड़े का यार फकीरी लै गया ॥२४॥
गोरख डारा कूप महै लै दरब को ।
बारह बरस सुकदेव तजा ना गरभ को ॥

(१) अपनी कीर्त्ति का सम्बत चलाया गया ।

दत्तात्रय सनकादि माया तजी केतनी ।
अरे हा पलटू बड़े खेलाड़ी यार हमारे ओतनी[१] ॥२५॥

॥ कच्चा बैराग ॥

मरे मंहै जिव डरै जिवै की चाहना ।
बिपति मंहै दुख होय सम्पति मँह गावना ॥
सब से रहै पुजाय पूजना कष्ट है ।
अरे हाँ पलटू कंचन काँच से भेद फकीरी नष्ट है ॥२६॥
अस्तुति से खुस होय निंदा क्रोध है ।
मित्र सेती भाव दुष्ट से बिरोध है ॥
सादी में सुख होय गमी में रोवना ।
अरे हाँ पलटू हर्ष सोक जो रहै फकीरी खोवना ॥२७॥

॥ भेष ॥

अटकि रहे सब जाय माया का चहला भारी ।
बूड़ैं औ उतरायँ पंडित ज्ञानी ब्रह्मचारी ॥
ये कलऊ के भक्त ब्याज दे करते बट्टा ।
अरे हाँ पलटू बटुरि बटुरि सब स्यार सिंह को मारैं ठट्टा ॥२८॥
सस्ते मंहै अनाज खरीद के राखते ।
मंहगी में डारैं बेचि चौगुना चाहते ॥
देखो यह बैराग दाम को गाड़ते ।
अरे हाँ पलटू जम की बात है दूर हाकिम अब डाँड़ते ॥२९॥
करते बट्टा ब्याज कसब है जगत का ।
माया में है लीनबहाना भगति का ॥
तनिक कहीं नहिं छूइ गया बैराग है ।
अरे हा पलटू जनमे पूत कपूत लगाया दाग है ॥३०॥

(१) एक ही जन्म-भूमि के।

पगरी धरा उतारि टका छः सात का।
मिला दुसाला आय रुपैया साठ का॥
गोड़ धरे कछु देहि मुड़ाए मूड़ के।
अरे हाँ पल ऐसा है रुजगार कीजिये ढूँढ़ि के॥३१॥
मसक्कत ना ह्वै सकी मुड़ाया मूड़ तब।
सेंतिमेंति में खाय मिला औसान[१] अब॥
तब नागा ह्वै लिहिन रहे ना काम के।
अरे हाँ पलटू मारि पीटि के खाहिं सो बेटा राम के॥३२॥
करामाति नट खेल अंत पछितायगा।
चटक मटक दिन चारि नरक में जायगा॥
भीर भार से संत भागि के लुकत हैं।
अरे हाँ पलटू सिद्धाई को देखि संत जन थुकत हैं॥३३॥

॥ पाखंडी ॥

झूठा सब संसार झूठे पतियात है।
दुइ झूठे इक ठौर नरक में जात हैं॥
जहँवा सुनैं पखंड तहाँ सब धावते।
अरे हाँ पलटू संतन के रे पास कोऊ नहिं आवते॥३४॥
जक्त भक्त कछु नाहिं बीच में रहि गये।
ज्यों अधमारा सांप केहू ओर ना भये॥
बेंचि बेंचि हरि नाम दाम लै लै धरे।
अरे हां पलटू सबद न बूझै तनिक फकीरी क्या करै॥३५॥

॥ चितावनी ॥

क्या ले आया यार कहा लै जायगा।
संगी कोऊ नाहि अंत पछितायगा॥

(१) सहज में।

सपना यह संसार रैन का देखना।
अरे हाँ पलटू बाजीगर का खेल बना सब पेखना[1] ॥३६॥
जीवन कहिये झूठ साच है मरन को।
मूरख अजहूँ चेति गहो गुरु सरन को॥
मास के ऊपर चाम चाम पर रंग है।
अरे हाँ पलटू जैहै जीव अकेल कोऊ ना संग है॥३७॥
भजि लीजै हरि नाम सोई तो नफा है।
आवैगा जब काल तेही दिन रफा[2] है॥
बाजीगर को ढोल तमासे सब गया।
अरे हाँ पलटू बिगरि गया जब नाच नचनियाँ रहि गया॥३८॥
सुर नर मुनि इक समय सबै मरि जाहिंगे।
राजा रंक फकीर काल धै खाहिंगे॥
तीनि लोक सब डरै भीम की हाँक में।
अरे हाँ पलटू जोधा भीम समान मिले हैं खाक में॥३९॥
भूलि रहा संसार काँच की झलक में।
बनत लगा दस मास उजाड़ा पलक में॥
रोवनवाला रोया आपनी दाह से।
अरे हाँ पलटू सब कोइ छेंके ठाढ़ गया किस राह से॥४०॥
माया ठगिनी बड़ी ठगै यह जाति है।
बचे न इह से कोय लगी दिन राति है॥
कौड़ी नाहीं संग करोरिन जोरि कै।
अरे हाँ पलटू गे राजा रंक फकीर लँगोटी छोरि कै॥४१॥
कच्चा महल उठाय कच्चा सब भवन है।
दस दरवाजा बीच झाँकता कवन है॥

(१) डिम्भ, नक़ल। (२) निबटेरा।

कच्चो रैयत बसै कच्चो सब जून है।
अरे हाँ पलटू निकरि गया सरदार सहर अब सून है ॥४२॥

हाथ गोड़ सब बने नाहिं अब डोलता।
नाक कान मुख ओही नाहिं अब बोलता॥
काल लिहिसि अगुवाय चलै ना जोर है।
अरे हाँ पलटू निकरि गया असवार सहर में सोर है ॥४३॥

आलम का बाच्छाह दुहाई मुलुक में।
हाथ जोरि सब खड़े हकूमत खलक में॥
तेल फुलेल लगाय जरकसी[1] पाग है।
अरे हाँ पलटू आखिर होना खाक लील का दाग है ॥४४॥

आया मूठो बाँधि पसारे जायगा।
छूछा आवत जात मार तू खायगा॥
किते बिकरमाजीत साका-बँधि मरि गये।
अरे हाँ पलटू राम नाम है सार सँदेसा कहि गये ॥४५॥

जो जनमा सो मुआ नाहिं थिर कोइ ह।
राजा रंक फकीर गुजर दिन दोइ है॥
चतती चक्की बीच परा जो जाइ कै।
अरे हां पलटू साबित बचा न कोइ गया अलगाइ कै ॥४६॥

माया यार फकीर कंहै जंजाल है।
सांप खिलौना करै एक दिन काल है॥
मांछी मधु लै धरै छोरि कोइ खायगा।
अरे हां पलटू सिंह करै जो जतन[2] स्यार होइ जायगा ॥४७॥

टोप टोप रस आनि मक्खी मधु लाइया।
इक लै गया निकारि सबै दुख पाइया॥

---

(१) जरी की। (२) संचना।

मो को भा वैराग ओहि को निरखि कै।
अरे हाँ पलटू माया बुरी बलाय तजा मैं परखि के ॥४८॥
फूलन सेज बिछाय महल के रंग में।
अतर फुलेल लगाय सुन्दरी संग में॥
सूते छाती लाय परम आनन्द है।
अरे हाँ पलटू खबरि पूत को नाहिं काल कौ फन्द है ॥४९॥
कलिया नान-पुलाव पेट भरि खाइ कै।
सीसी महैं सराब चिराग जराइ कै॥
चीरे बन्द लगाय गले में सोवते।
अरे हाँ पलटू लगे फिरिस्ते आय पूत तब रोवते ॥५०॥
झूठ साच कहि दाम जोरि कै गाड़ने।
औषधि कूटहि रोज जिये के कारने॥
जीयै बरष हजार आखिर को मरैगा।
अरे हाँ पलटू तन भी नाहीं संग कहा लै करैगा ॥५१॥

॥ भक्ति ॥

खाला[१] के घर नाहिं भक्ति है राम की।
दाल भात है नाहिं खाये के काम की॥
साहिब का घर दूर सहज ना जानिये।
अरे हाँ पलटू गिरे तो चकनाचूर बचन को मानिये ॥५२॥
समुझि बूझि पगु धरै मरे की चाल है।
सिर के मोल बिकाय फकीरी ख्याल है॥
दूध छठी का जाय तनिक ना मानते।
अरे हाँ पलटू साहिब का घर दूर खिलौना जानते ॥५३॥
पहिले कबर खुदाय आसिक तब हूजिये।
सिर पर कफ्फन बांधि पांव तब दीजिये।

(१) मौसी।

आसिक को दिन राति नाहिं है सोवना।
अरे हां पलटू बेदर्दी मासूक दर्द कब खोवना ॥५४॥
जो तुझको है चाह सजन को देखना।
करम भरम दे छोड़ि जगत का पेखना[१] ॥
बांध सुरत की डोरि सब्द में पिलैगा।
अरे हां पलटू ज्ञान ध्यान के पार ठिकाना मिलैगा ॥५५॥
जोड़ौं ना दरबार इसिम[२] पर मरौंगा।
सिफति[३] करौं दिन राति टारे ना टरौंगा ॥
जिव मेरो बरु जाय हारिहौं जनम को।
अरे हां पलटू तेरो अब कहलाय कहावौं कवन को ॥५६॥

॥ सूरमा ॥

आठ पहर की मार बिना तरवार की।
चूके सो नहिं ठौर लड़ाई धार की ॥
उसही से यह बनै सिपाही लाग का।
अरे हां पलटू पड़ै दाग पर दाग पंथ बैराग का ॥५७॥
कड़ुवा प्याला नाम पिया सो ना जरै।
देखा देखी पिवै ज्वान सो भी मरै ॥
धर पर सीस न होय उतारै भुइँ धरै।
अरे हां पलटू छोड़ै तन की आस सरग पर घर करै ॥५८॥
भक्ति करै कोइ सूर जक्त से तोरि कै।
ज्ञान लिये समसेर[४] लड़ै झकझोरि कै ॥
रहै खेत पर ठाढ़ भक्ति की डेर[५] मंहै।
अरे हां पलटू झूठा टिकै न कोइ राम के घर मंहै ॥५९॥
राम के घर की बात कसौटी खरी है।
झूठा टिकै न कोय आजु की घरी लै ॥

---

(१) डिम्भ, दिखावा। (२) नाम। (३) गुनानुवाद। (४) तलवार। (५) डर।

जियतै जो मरि जाय सीस लै हाथ में।
अरे हां पलटू ऐसा मर्द जो होय परै यहि बात में ॥६०॥
सबद लिहे तरवारि म्यान है ज्ञान का।
दुरमति मुरचा खोय मसकला ध्यान का॥
सतसंगति की ओटि मूठि है नाम की।
अरे हां पलटू रहै हाथ में लगी समय पर काम की ॥६१॥
साहिब के घर बीच गया जो चाहिये।
सिर को धरै उतारि कदम को नाइये॥
जियते जी मरि जाय सोई बहुरायगा।
अरे हां पलटू जेकरे जिव की चाह सोई भगि जायगा ॥६२॥

॥ विश्वास ॥

जिन्हैं भरोसा एक बार नहि बाँकता।
जल थल लगै न बाय रच्छा कै राखता॥
हरि को सरन कि लाज उबारै कष्ट से।
अरे हां पलटू भारत में भरदूल बचा गज घंट से ॥६३॥
बार न बाँकै मोर कोई क्या करेगा।
रूठै तीनिउँ लोक नाहिं मन डरैगा॥
रच्छा करते आप दिये दोउ हस्त[१] हैं।
अरे हाँ पलटू सिर पर गोबिदनंद[२] खड़े समरत्थ हैं ॥६४॥
सिंह जो भूखा रहै चरै ना घास को।
हंस पिवै ना नीर करै उपवास[३] को॥
सती एक औ सूर पाँच हैं काम के।
अरे हां पलटू संत न मांगै भीख भरोसे राम के ॥६५॥

॥ शरण ॥

जप तप ज्ञान बैराग जोग ना मानिहौं।
सरग नरक बैकुंठ तुच्छ सब जानिहौं॥

(१) हाथ। (२) पलटू साहिब के गुरू का नाम। (३) फाका।

लोक बेद ना सुनौं आपनी कहौंगा।
अरे हां पलटू एक भक्ति सिर धरौं सरन ह्वै रहौंगा ॥६६॥
दीन्हा संतन डारि राम पर भार है।
संतन के रे हेतु दसो अवतार है॥
तजि के हरि बैकुंठ रहत हैं साथ में।
अरे हां पलटू संतन के रखवार सुदरसन हाथ में ॥६७॥

॥ उपदेश ॥

धरौ फूँकि के पांव कुसँग ना कीजिये।
भजन मंहै भँग होय सोच ना लीजिये॥
कोउ ना पकरै फेट करै जो त्याग है।
अरे हां पलटू माया संग्रह करै भक्ति में दाग है ॥६८॥
मन में बिनती करै डगमगी छोड़ि दै।
जरै मरै अब बनै सिंधोरा हाथ लै॥
मरै कंहै जब चली ससुन तब क्या करै।
अरे हां पलटू सती बटोरै बस्तु जरै से जब डेरै ॥६९॥
हरि चरचा से बैर संग वह त्यागिये।
अपनी बुद्धि नसाय सबेरे भागिये॥
सरबस वह जो देइ तो नाहीं काम का।
अरे हां पलटू मित्र नहीं वह दुष्ट जो द्रोही राम का ॥७०॥
आसन दृढ़ ह्वै रहै जगत से हारना।
निद्रा बसि में करै भूख को मारना॥
काम क्रोध को मारि आपु को खोवना।
अरे हां पलटू पांव पसारे यार मौज से सोवना ॥७१॥
संत सोइ ह्वै जाय संजम में जो रहै।
गया आपु को भूलि खबर अब को कहै॥

आगि के बीच पतंग बहुरि ना होन की।
अरे हां पलटू परी सिंधु में जाय डेरी[1] जब लोन की ॥७२॥

माया औ बैराग दोऊ में बैर है।
लिये कुल्हाड़ी हाथ मारता पैर है॥
किया चहै बैराग मया में जायगा।
अरे हां पलटू जो कोइ माहुर खाय सोई मरि जायगा ॥७३॥

लोक लाज जनि मानु बेद कुल कानि को।
भली बुरी सिर धरौ भजो भगवान को॥
हँसिहै सब संसार तो माख[2] न मानिये।
अरे हां पलटू भक्त जक्त से बैर चारो जुग जानिये ॥७४॥

देव पित्र दे छोड़ि जगत क्या करैगा।
चला जा सूधी चाल रोइ सब मरैगा॥
जाति बरन कुल खोइ करौ तुम भक्ति को।
अरे हां पलटू कान लीजिये मूँदि हँसे दे जक्त को ॥७५॥

केतिक जुग गये बीति माला के फेरते।
छाला परि गये जीभ राम के टेरते॥
माला दीजे डारि मनै को फेरना।
अरे हाँ पलटू मुँह के कहे न मिलै दिलै बिच हेरना ॥७६॥

तीरथ ब्रत में फिरे बहुत चित लाइ कै।
जल पखान को पूजि मुए पछिताइ कै॥
बस्तु न बूझी जाय अपाने हाथ में।
अरे हाँ पलटू जो कुछ मिलै सो मिल संत के साथ में ॥७७॥

केतिक फिरैं उदास बनै बन धावते।
केतिक साधैं जोग खाक सिर नावते॥

(१) डली। (२) अपमान।

केतिक कथनी कथैं केतिक आचार में।
अरे हाँ पलटू कोउ न पावै पार बड़े दरबार में ॥७८॥

सुपना यह संसार जागता आइ कै।
चले जुवा में हारि मनुष तन पाइ कै॥
देखत सोना लगै सकल जग काँच है।
अरे हाँ पलटू जीवन कहिये झूठ तो मरना साच है ॥७९॥

तीसो रोजा किया फिरे सब भटकि कै।
आठो पहर निमाज मुए सिर पटकि कै॥
मक्के में भी गये कबर में खाक है।
अरे हाँ पलटू एक नबी का नाम सदा वह पाक है ॥८०॥

ना बाम्हन ना सूद्र न सैयद सेख है।
हम तुम कोऊ नाहिं बोलता एक है॥
दूजा कोऊ नाहिं यही तहकीक है।
अरे हाँ पलटू लाख बात की बात कहा हम ठीक है ॥८१॥

डाँड़ी पकरे ज्ञान छिमा के सेर है।
सुरत सबद से तौल मने का फेर है॥
भला बुरा इक भाव निबाहे जोर है।
अरे हां पलटू सन्तोष की करै दुकान महाजन जोर है ॥८२॥

करामात सब झूठ बिस्वास को थापना।
जैसे स्वान को हाड़ लोहू है आपना॥
कहे सेती का मिलै रांड़ कै गावना।
अरे हां पलटू जो जस करै सो मिलै आपनी भावना ॥८३॥

सुखमन नरी भरावै पुरिया ज्ञान की।
ढरकी फेंकै सुरत राछ है प्रेम की॥

तन करगह के बीच बीनना भक्ति है।
अरे हां पलटू चलै सिताबी हाथ उघारा जक्त है ॥८४॥
लाखों मौनी फिरैं लाखों बाघम्बरी।
अधमुखी औ नखी लाखों लोहलंगरी ॥
लाखों जल में पड़े (लाखों) धूरि को छानते।
अरे हां पलटू जा में राजी राम सो कोउ नहिं जानते ॥८५॥
हरि के दास कहाय जतन ना कजिये।
बाकी दीजे छोड़ि पेट भरि लीजिये ॥
जतन करेगा जोई सोई पछितायगा।
अरे हां पलटू जोगवे आग चकोर पंख जरि जायगा ॥८६॥
चलती चक्की देखि दिया मैं रोय है।
पीस गया संसार बचा न कोय है ॥
अधबीचे में परा कोऊ ना निरबहा।
अरे हां पलटू बचिगा कोऊ संत जो खूँटे लगि रहा ॥८७॥
सजन लगाया बाग देखने जायँगे।
फूल लगा बिस्वास बाग में खायँगे ॥
भौंरा रहा लुभाइ सहसदल फूल में।
अरे हाँ पलटू जो दिन गया सो गया अपाने भूल में ॥८८॥
डेरै लोक की लाज परलोक नसायगा।
माया के परसंग ज्ञान मिटि जायगा ॥
तजे न भोग बिलास चाहता जोग है।
अरे हाँ पलटू बिना बिचार बिबेक भेष में रोग है ॥८९॥
तीरथ संत समाज आतमा गंग है।
तट है सील सनेह रु दया तरंग है ॥
निरमल नीर गँभीर ज्ञान धारा बहे।
अरे हाँ पलटू गुरु दरियाव नहाय तो दुरमति ना रहे ॥९०॥

साकी[1] छानै सुरति अमल हरि नाम का ।
और अमल सब झूठ नाहिं है काम का ॥
काया कूँड़ी करै पवन का घोटना ।
अरे हां पलटू पीवै प्याला प्रेम ज्ञान घर लोटना ॥६१॥

॥ ज्ञान ॥

पहिले है बैराग भक्ति तब कीजिये ।
सतसंगत के जोग ज्ञान तब लीजिये ॥
ऐसे उपजे ज्ञान भक्ति को पाइ कै ।
अरे हाँ पलटू लै जा उपरै मारि ठीक ठहराइ कै ॥६२॥

॥ भेद ॥

दृष्टि कमठ का ध्यान गगन में लावना ।
मकरी उलटै तार तेहिं भाँति चढ़ावना ॥
झिलिमिलि झलकै नूर तिरकुटी महल में ।
अरे हां पलटू भया हमारा काम संत की टहल में ॥६३॥
यार लगाया बाग तेही का फूल है ।
सहस रंग तिहि बीच रंग में मूल है ।
गंग जमुन के बीच चौक है चाँदनी ।
अरे हां पलटू कड़कत है दिन रात प्रेम की दामिनी ॥६४॥
अनहद बाजै तूर सुन्न में धजा फरक्कै ।
मुवा होव सो जाय देखत कै जान सरक्कै ॥
अठएँ लोक के पार भरा इक हौज है ।
अरे हाँ पलटू मुद्दा हुआ तमाम करै फिर मौज है ॥६५॥
अर्ध उर्ध के बीच हिंडोला चंग[2] है ।
झूल संत सुजान सजन से रंग है ।

(१) छन्ना । (२) चंगा, सुघर ।

सुरत सब्द कै खेल सहर कै नाइबी।
अरे हां पलटू अर्ध उर्ध के बीच बड़ी है साहिबी ॥९६॥
वार पार सब एक कोऊ ना आन है।
वायू है दोउ एक पान आपान है॥
जीव ब्रह्म के बीच परी इक साल है।
अरे हां पलटू उहि गोकुल के घाट कन्हैयालाल है ॥९७॥
गगन महल के बीच अमी झरि लागिनी।
टोपन चूवै बूँद पियै इक सांपिनी॥
सांपिनि डारा मारि बूँद को पिया है।
अरे हां पलटू अमर लोक गे हंस जुगो जुग जिया है ॥९८॥
अरध उरध के बीच बसा इक सहर है।
बीच सहर में बाग बाग में लहर है॥
मध्य अकास में छूटै फुहारा पवन का।
अरे हां पलटू अंदर धँसि के देखु तमासा भवन का ॥९९॥
सुन्न समाधि के बीच ध्यान को लावना।
सुखमनि के रे घाट पवन ले आवना॥
टूटे ना वह डोरि बाट आरूढ़ है।
अरे हां पलटू ऐसे को परनाम अवस्था गूढ़ है ॥१००॥
जगमग जोति जगाव झिरिहिरी बीच में।
कमठ दृष्टि से मारि गिरौ जनि कीच में॥
सोहं सोहं सब्द रैनि दिन बोलता।
अरे हां पलटू जब देखो गरकाब पलक नहिं खोलता॥१०१॥
बिना जंतरी जन्त्र बाजता गगन में।
बिसरि गया संसार उसी के लगन में॥
जो कोई जनमी होय हमारे लगन की।
अरे हां पलटू सो प्यारी लै जानि बात यह सजन की ॥१०२॥

गाड़ि ज्ञान कौ बांस सुरति को डोर है।
चढ़ा खिलाड़ी धाय जगत में सोर है॥
अमर लोक के बीच हरी इक दूब है।
अरे हां पलटू हद अनहद के पार तमासा खूब है॥१०३॥
आसिक चला सिकार बड़े दरियाव में।
बड़का रोहू बझा परा जब दाव में॥
बूड़े कितिक गँवार येही के कारने।
अरे हां पलटू लगा हमारे हाथ कुंड के सामने॥१०४॥
पच्छिउँ गंगा बहै पानी हैं जोर का।
बीच महैं इक कुंड मुरेरा तोर[1] का॥
उलटी बहै बयार नाव मुरकाय दे।
अरे हां पलटू उतरे येहि के पार तो सुधी जाय दे॥१०५॥
तिरबेनी के घाट नाव को आनि कै।
सुखमनि घाट थहाय चलावो जानि कै॥
असी संगम के बीच पहारी फोरि कै॥
अरे हाँ पलटू गुन[2] को खैंचु सिताब काम है जोर कै॥१०६॥
जहाँ न जप तप नेम ज्ञान ना ध्यान है।
पानी पवन अकास नाहिं ससि भान है॥
जोग जुक्ति ना सुरति नाहिं दिन रात है।
अरे हाँ पलटू मन बुधि चित ना जाय तहाँ की बात है॥१०७॥

॥ दया ॥

माता बालक कँहै राखती प्रान है।
फनि मनि धरै उतारि ओही पर ध्यान है॥
माली रच्छा करै सींचता पेड़ ज्यों।
अरे हाँ पलटू भक्त संग भगवान गऊ औ बच्छ त्यों॥१०८॥

(१) तोड़। (२) रस्सी जिसे मस्तूल में बाँध कर नाव को खींचते हैं।

अरिल

साहिब के दरबार कमी किस बात की।
चूक चाकरी माहिं परी दिन रात की॥
जल थल जीव चराचर की सुधि लेत है।
अरे हां पलटू कुसवारी[1] में कीटहिं चारा देत है॥१०९॥

कौन सकस करि जाय नाहिं कछु कछु खबर है।
बीच में सब के देइ बड़ा वह जबर है॥
हरि धरि मेरो रूप करै सब काम है।
अरे हां पलटू बीच मंहै इक नाम मोर बदनाम है॥११०॥

॥ क्षमा ॥

भूखे औ पेटभरे दोस सब लावते।
बरषा सूखा पड़े दोउ बिधि गरियावते॥
भली बुरी कोउ कहै बनत है सहे से।
अरे हां पलटू बड़े भये भगवान छिमा के किहे से॥१११॥

॥ संतोष ॥

अजगर ना ब्योपार करन कछु जात है।
डोलै कै सक[2] नाहिं बैठे वह खात है॥
खुसिहारी के किरिम मंहै किन्ह दिया है।
अरे हां पलटू दोऊ से संतोष मोल हम लिया है॥११२॥

॥ दीनता ॥

करम रहे दुइ लिखे पत्र एकै मंहै।
महा पुरुष कै अंस दिया पापी कंहै॥
भक्ती और को रही धोखे में मोहिं दिया।
अरे हां पलटू आखिर बड़े की चूक दिया फिर ना लिया॥११३॥

---

(१) टसर के कीड़े का घर जो वह बेर के पेड़ पर अपने मुँह के लुआब से बना लेता है। (२) ताकत।

बनियाँ जाति मैं अधम बड़ा हौं पातकी ।
अधरम आठो गाँठ तनिक नहिं सातुकी ॥
दूसर पलटू रहा भक्ति ओहि कँह रही ।
अरे हाँ पलटू भूलि गया भगवान दिया मो कँह सही ॥११४॥
नवनि गरीबी दया भक्ति का मूल है ।
इतना गुन ना होय बास बिनु फूल है ॥
बड़ा भया किस काम करै हंकार है ।
अरे हाँ पलटू मीठ कूप जल पिवै समुंदर खार है ॥११५॥

॥ मन ॥

मन ना पकरा जाय बहादुर ज्वान है ।
करत रहै खुरखुंद[१] बड़ा सैतान है ॥
ऐसा यार हरीफ रहत मन हलक में ।
अरे हाँ पलटू उड़ता कोस हजार पच्छ[२] बिनु पलक में॥११६॥
काम क्रोध बसि किहा नींद अरु भूख को ।
लोभ मोह बसि किया दुक्ख औ सुक्ख को ॥
पल में कोस हजार जाय यह डोलता ।
अरे हाँ पलटू वह ना लागा हाथ जौन यह बोलता ॥११७॥
नापै चारिउ खूँट थहावै समुँद को ।
सब परबत को तौलि गनै फिर बूँद को ॥
हारा सब संसार बात है फेर का ।
अरे हाँ पलटू वह नहिं लागै हाथ जो चालिस सेर[३] का ॥११८॥
जानि बूझि के परै आप से भाड़ में ।
ता से काह बिसाय खुसी जो मार में ॥
पीटा गा बहु बार तनिक नहिं डेरत है ।
अरे हाँ पलटू यह मन भया चमार चमारी करत है॥११९॥

---

(१) खुरचाल, बदमाशी । (२) पंख । (३) मन ।

सहज कूप में परै सहज रन जूझना।
सहजै सिंह सिकार अगिन के कूदना॥
कितनी करै हियाव बात सब गर्द है।
अरे हाँ पलटू मन को राखै मार सिपाही मर्द है॥१२०॥

॥ माया ॥

दिया जक्त बौराय माया कलवारिन।
द्रब्य लेइ बिष देइ पियावै बारुनी[१]॥
इक तो लोटै घूरि चोख इक माँगता।
अरे हाँ पलटू अमल नहीं यह भूत धाय के लागता॥१२१॥

॥ मान ॥

लोभ मोह को तजा तजा जग आस को।
काम क्रोध को तजा भूख और प्यास को।
नंगा बन बन फिरै बसन ना तने में।
अरे हाँ पलटू सबै बात गइ खोय बड़ाई मान में॥१२२॥

॥ कनक कामिनी ॥

निकरे घर को त्यागि लराई करन को।
चले खेत से भागि डेरे जब मरन को॥
दुइ नंगी तरवार किहा तिन्ह गरद है।
अरे हाँ पलटू कनक कामिनी सेती बचै सो मरद है॥१२३॥

॥ मूर्खता ॥

हरि हीरा हरि नाम फेंकि तेहिं देत हैं।
सिद्धाई है काँच तुच्छ को लेत हैं॥
करामाति को देखि मूढ़ ललचात हैं।
अरे हां पलटू इन बातन से संत बहुत अलसात हैं॥१२४॥
लोभ मोह के बीच परा सब लोग है।
काम क्रोध सुत नारि नरक का भोग है॥

(१) शराब।

पीयत हैं बिष धाय अमृत करि जानते ।
अरे हाँ पलटू मने करै हित जानि बैर सब मानते ॥१२५॥

॥ दुर्मत ॥

दुरमति जेहि माँ बसै ज्ञान हर लेत है ।
तुरत करत है नास बड़ा दुख देत है ॥
तेज पूँज हर लेय बुद्धि बल भावना ।
अरे हाँ पलटू दुरमति बसे बिलाय गया है रावना ॥१२६॥
लाख खाय जो स्वान चाटने जायगा ।
तजि कै काग कपूर बिष्टा को खायगा ॥
तजै न चोरी चोर सहै बहु सासना ।
अरे हाँ पलटू छुटै न जीव की खोय लगी वह बासना ॥१२७॥
मन माया ना तजै उलटि फिरि लागता ।
ज्यों जहाज कै काग जहाजै ताकता ॥
मारे मिटै न छुटै टेव[१] है करम की ।
अरे हाँ पलटू मिटै न जिव की खोय परी है जनम की ॥१२८॥
बातन के री लाग चलै तरवार है ।
करते दोउ दल जोरि बात पर मार है ॥
कछु कोऊ कहि जाय नफा ना टोट[२] है ।
अरे हाँ पलटू संतहि सहैं कुबचन कठिन यह चोट है ॥१२९॥

॥ वेद पुरान ॥

नित उठि सुनै पुरान धसै बैराग ना ।
बिषय बासना लील छुटै वह दाग ना ॥
छुटै नहीं मरजाद बड़ाई खात है ।
अरे हाँ पलटू ज्यों ज्यों सुनै पुरान अधिक लपटात है ॥१३०॥

---

(१) आदत, बान। (२) घाटा।

भूला एक न दोय सकल संसार है।
लोक बेद के साथ बहा मँझधार है॥
मैं भूला बहु बार भेड़ के संग में।
अरे हाँ पलटू अब की भया है चेत गुरू के रंग में॥१३१॥

॥ जोड़ी जाड़ी बानी ॥

जौं लगि पहुँचै नाहिं कथै ना झूठी बानी।
मिलै सबद जब जाय साच टकसार ठिकानो॥
जोरि जारि दुइ बात कहै जो राम की।
अरे हाँ पलटू ज्यौं बालू की भीत रही किस काम की॥१३२॥

॥ मिश्रित ॥

मैं जानौं जग स्यान जगत है बौरहा।
भजै नहीं भगवान केतिक हमने कहा॥
तजै सरग की राह नरक में जात है।
अरे हाँ पलटू परै आप से कूप कहै रिसियात है॥१३३॥
भक्त द्रोह जिन्ह किया कोऊ ना बचा है।
गज को पकड़ा ग्राह जाय के हता है॥
दुर्बासा पर चक्र छुटा है नेक में।
अरे हां पलटू हरिनाकुस को मारि तमाचा एक में॥१३४॥
जननी रहै तो बाँझ पै साकट ना जनै॥
होतै बरु मरि जाय जिये से ना बनै।
पुत्र से भला मदार फरै ना दोष में।
अरे हाँ पलटू पुत्रवती हरि भक्त होय जेहि कोष में॥१३५॥
केतिक कहा पुकारि कोऊ नहिं बूझता।
करम-बंध संसार तनिक नहिं सूझता।
भेष मँहै परपंच अकेले डोलना।
अरे हाँ पलटू जुदी हमारी राह हमैं क्या बोलना॥१३६॥

सब भेंड़ी की राह चले हैं जूटि के।
इक ओर आसिक चला अकेला फूटि कै॥
उलटि के खेलै खेल भया मन मगन में।
अरे हाँ पलटू छुटा भुइँचपा जाय एक ठो गगन में ॥१३७॥
भंग भजन में करै दुष्ट यह पेट है।
बिना भजन भगवान से नाहीं भेट है॥
सतसंगति जब करै भूख तब मिटैगी।
अरे हाँ पलटू यहि का यही इलाज फिकिर सब फटैगी ॥१३८॥
जग के लेखे जोगिया बाउर होइ गया।
जोगिया के लेखे बाउर जक्त सब ही भया॥
कौन करै यह न्याव दोऊ परमान है।
अरे हाँ पलटू नरक सरग की राह सदा अलगान है ॥१३९॥
औंधे बासन नीर सो पिंड सँवारिया।
गर्भ बीच दस मास मानुषा राखिया॥
भूला कौल करार राम से भेद है।
अरे हाँ पलटू जेहि पतरी में खाय करै जग छेद है ॥१४०॥
सन्तन किया बियाह दुलहिनी ज्ञान की।
सतगुरु दिया कराय बेटी जजमान की।
तन माड़ो के बीच अजब इक चेहरा।
अरे हाँ पलटू मन दूलह रघुनाथ चढ़े सिर सेहरा ॥१४१॥
रहते रोजा नित्त साँझ कै मुरगी मारै।
आठौ वक्त निमाज गाय की कुही निहारै॥
सब में रहै खुदाय गले में छूरी देता।
अरे हां पलटू जाया चाहै भिस्त खून गरदन पर लेता ॥१४२॥
मुसलमान के जिबह हिन्दू के मारैं झटका।
खाइ दूनों मुरदार फिरत हैं दूनिउँ भटका॥

वै पूरब को जाहिं पच्छिम वै ताकते ।
अरे हाँ पलटू महजिद देवल जाय दोऊ सिर मारते ॥१४३॥
करम बँधा संसार बँधावै आप से ।
जमपुर बाँधा जाय करम की फाँस से ॥
कोई न सकै छुड़ाय रस्सा यह मोट है ।
अरे हां पलटू संतन डारा काटि, नाम की ओट से ॥१४४॥
अफर फरावैं गाछ, रैनि को दिन करैं ।
बांझिन बेटा देंइ, बेद गूँगा पढ़ैं ॥
पाहन जल उतराय, दरस पापी तरैं ।
अरे हां पलटू लिखा कर्म को मेटि, संत जन फिर गढ़ैं ॥१४५॥
बांधे बनिया हाट, नहीं है लावना ।
इसक बिना का राग, बनै नहिं गावना ॥
मन मानै सो करै, बात यह चौज की ।
अरे हां पलटू कहे सुने से नाहिं, फकीरी सौक की ॥१४६॥
निकरे जग से तोरि, भया मन त्याग में ।
मारग पकरिन कठिन, धसे बैराग में ॥
माया आगे मिली, रहे ललचाय कै ।
अरे हां पलटू धसे जक्त में, फेर महंती पाय कै ॥१४७॥

॥ ककहरा १४८-१८० ॥

कक्का केती कही समुझाय कहा कोई नहिं मानै ।
खारी और कपूर दोऊ एकै में सानै ॥
कंचन घुंघची आनि तुला एकै में तौलै ।
अरे हां पलटू झूठा मारै गाल, साच कैसे कै बोलै ॥१॥
खक्खा खरा बनावे खोट खोट को खरा बनावै ।
चोर चौतरे बैठि साह को पकरि मँगावै ॥

काम क्रोध नहिं मरै गुरू औ सिष्य अनारी ।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त बिचार, कहौ को सुनै हमारी ॥२॥

गग्गा गाली पावैं संत सिद्ध की करैं बड़ाई ।
सूद्र कलंदर द्रब्य सिद्ध से माँगन जाई ॥
अंधे ऐना हाथ कहौ कैसे कै सूझै ।
अरे हाँ पलटू हमरा तत्त बिचार, बचन कोई नहिं बूझै ॥३॥

घघ्घा घर में बस्तु हिरान ढूँढ़न को बन बन धावै ।
गुरु सिष दोऊ अंध कहौ को राह बतावै ॥
राजा पाँच पचीस काल की चोट है ।
अरे हाँ पलटू बचि है कोई साध, नाम की ओट है ॥४॥

नन्ना नाना कीन्हे भेष मिटी नहिं मन की आसा ।
बहुरुपिया का स्वांग अंत को नर्क निवासा ॥
माया दै दै ढोल सबन को नाच नचाया ।
अरे हाँ पलटू लगी रहै वह डोरि, बहुरि चौरासी आया ॥५॥

चच्चा चरक मरक संसार मकर से दुनिया खावै ।
बातैं कहै बनाय सोई अब सिद्ध कहावै ॥
मिली नहीं कछु बस्तु भेद का मरम न जाना ।
अरे हाँ पलटू चमर-दृष्ट संसार, इष्ट कैसे पहिचाना ॥६॥

छछ्छा छके नहीं हरिनाम पीवते भाग धतूरा ।
बैठि गुफा के बीच खान को लड्डू पेड़ा ॥
मँगनी कीन्हो जाय ब्याह बिन रहो कुवारी ।
अरे हाँ पलटू खसम पड़ा नहिं चीन्ह, झूठ कस लावै तारी ॥७॥

जज्जा जटा रखाये सीस बगल में तिर्गुन फासी ।
गो पर करते घात देखन को बड़े उदासी ॥

बुझी नहीं है आग राख में रहती दबकी ।
अरे हाँ पलटू तन से देखा त्याग, चाह यह सब के मन की ॥८॥
झझ्झा झँखत[1] फिरत कम्मखत[2] रोइ कै जनम गँवावै ।
बस्तु न सकै सम्हारि दोऊ गति सोग लगावै ॥
हीरा लैलै हाथ आप से देत बहाई ।
अरे हां पलटू करम लिखा है पोत, कहो कस हीरा पाई ॥९॥
टट्टा टरै खेत से भागि सूर और बीर करारी ।
हाथ जोरि मिलि गये माया जब दीन्ही तारी ॥
लाखन में कोइ संत माया का मुहड़ा फेरी ।
अरे हाँ पलटू संतन किया बिबेक, माया भइ उनकी चेरी ॥१०॥
ठठ्ठा ठौर लेहु ठहराय गुरू से पूछि ठिकाना ।
करड़ी खैंच कमान सुरत से फोड़ निसाना ॥
फूट जाय ब्रह्मंड गगन में करै रकाना[3] ।
अरे हाँ पलटू बड़े मरद का काम, रुंड पर बाँधै बाना ॥११॥
डड्डा डगर से रहे भुलाय नगर को राह बताये ।
चले पैर नहिं एक मनो मुहँई से आये ॥
मजलिस बैठि गँवार कहै पहुँचे हैं हमहा ।
पड़ैं कसौटी जाय सार टकसार में तबहीं ॥१२॥
ढढ्ढा ढालों की क्या ओट लड़ौ ले सब्द कटारी ।
खड़े रहौ मैदान हाँक दै सुरति सम्हारी ॥
तिल तिल लागैं घाव टरै नहिं खेत से ।
अरे हां पलटू मड़ा रहै कोइ साध, धनी के हेत से ॥१३॥
तत्ता तन में लाये छाल कुम्भ का बक्कल पहिरे ।
बैधि गुफा में जाय खोद के धरती गहिरे ॥

(१) झींकते । (२) कम्बख्त, अभागा । (३) ठेका ।

करते प्रानायाम उलटि कै खैंचैं स्वासा ।
अरे हाँ पलटू बैठे आसन मारि, मिटी नहिं मन की आसा ॥१४॥
थथ्था थकित भये हम देखि सबै गफलत में सोवैं ।
भक्ति का पौधा काटि बिषय का अंकुर बोवैं ॥
तपसी भे धनवंत सावै[1] सब भये भिखारी ।
अरे हाँ पलटू रोगी ह्वै गये नीक, बैद सब भये अजारी[2] ॥१५॥
दद्दा दबकि रहा है स्यार सिंह का पहिरे बाना ।
दाग दगाये सीस लड़न का मरम न जाना ॥
हाकिम रहे छिपाय भेद पाया नहिं कोई ।
अरे हां पलटू तक तक रहिये ताक, कहै सो दुसमन होई ॥१६॥
धध्धा धनी कहावैं बड़े पूँजी घर में नहिं इक किन ।
बैठे करत गुमान रैनि दिन जात भजन बिन ॥
चौड़ी लाय दुकान करें पकवानहिं फीका ।
अरे हां पलटू जाने खावनहार, और नहिं स्वाद उसी का ॥१७॥
पप्पा पड़ै पतंगा जाय आप से दीपक माहीं ।
तन को दिया जराय सोच दीपक को नाहीं ॥
पहिले तो दीपक जरै पाछे जरै पतंग ।
अरे हां पलटू हरि हरि जन से प्रीति करि, मिलि दोऊ इक अंग ॥१८॥
फफ्फा फाका फकर जरूर फरक आलम से रहिये ।
भली बुरी कहि जाय बात दो सबकी सहिये ॥
कहर मेहर की नजर लगन साहिब से लावै ।
अरे हाँ पलटू लगी रहै वह डोरि, छुटै तो गोता खावै ॥१९॥
बब्बा बगुला कीन्हे भेष हंस की बोली बोलै ।
नीर छीर दोउ महै आप से परदा खोलै ॥

(१) साह । (२) रोगी ।

राँगा रूपा सेत नजर बिन को अलगावै।
अरे हाँ पलटू जहवाँ नाहिं हंस तहाँ बगु हंस कहावै ॥२०॥
भभ्भा भरमन ही को खै[1] करै इंद्रिन से निगरा[2]।
नाम से रहै भुलाय चित्त दै करते सिगरा[3]॥
निगरा सिगरा नाहिं जोई है जाग्रत जोगी।
अरे हाँ पलटू निगरा सिगरा आहिं, कहो कोइ रोगी भोगी ।२१।
मम्मा मन मुरीद होइ नाहिं आपु वै पीर कहावैं।
बिना बंदगी फैज कहो कोइ कैसे पावै॥
कितनौ नाचौ नाच नाक बिन नकटो बाई।
अरे हाँ पलटू सतगुरू होहिं दयाल, देहिं तौ मिलै बड़ाई ॥२२॥
ररी रांड भराये माँग नैन भरि काजर लाये।
बिना खसम को सेज कहा भा फूल बिछाये॥
तन पर लत्ता नाहिं ओढ़ाती खसमहिं सोई।
अरे हाँ पलटू बिना भजन की रांड़, कहो कितना तन धोई ॥२३॥
लल्ला लालच बुरो बलाय यही सब बात बिगारी।
लालच जेहि का नाम माया की है महतारी॥
कनिक कामिनी रूप धरे सुर नर मुनि लूटै।
अरे हाँ पलटू ऐसा कोई ना मिला, जो इन से छूटै ॥२४॥
वव्वा वारूँ तन मन सीस उसी का कहूँ सँदेसा।
हित अपना पहिचान सुनत ही मिटै कलेसा॥
पूरन प्रगटे भाग मिले वहि देस के साइँ।
अरे हाँ पलटू करिये उनसे प्रीत, नहीं उनसे अधिकाई ॥२५॥
सस्सा सरबर[4] करते स्यार सिंह से रार बढ़ावै।
काग कहै हम बड़े हंस से गाल बजावै॥

(१) छय या नाश। (२) निग्रः या रोक। (३) संग्रह या मेल। (४) बराबरी।

भूँकन लागे स्वान संत सुनि कान को मूँदा ।
अरे हाँ पलटू आखिर बड़े सो बड़े, दिन चार का धींगम धूँगा ।२६।
हहा हक है वही हलाल सबर से बैठे आवै ।
खाना वही हराम पेट को माँगन जावै ॥
हाथी धीरज धरै साँझ को मन भर पावै ।
अरे हाँ पलटू टूक टूक को स्वान, बीस घर भटका खावै ॥२७।
अआ अपनी ओर निहार तुझे क्या परी परारो[1] ।
घर में मूसै चोर और को झिखै अनारो ॥
अपनी करनी साच और सब झूठ कहानी ।
अरे हाँ पलटू धोय सिताबी हाथ, जात है बहता पानी ॥२८॥
इई इसम[2] करै कोइ मरद और सब पेट जियावैं ।
मार गया कोइ सिंह खान को गीदड़ धावैं ॥
छत्र फिरै सिर ऊपर सोई बाच्छाह कहावै ।
अरे हाँ पलटू सब नायक हो जायँ, तो बरधी कौन लदावै ।२९॥
उऊ उमर गई सब बीति चलन को दिन है थोरा ।
अहमक भजन बिचारु गोड़ धरि करौं निहोरा ॥
भूले कौल करार धनी घर कैसे जइहा ।
अरे हाँ पलटू सिर पर मारै धौल काल, तब कहाँ लुकइहो ॥३०॥
एऐ एक ओर पढ़ै कुरान बाँग धुनि लावै मुलना ।
एक ओर बाजै संख बेद धुनि पंडित रटना ॥
सोय रहे मैदान खाय बरु माँगि के ।
अरे हाँ पलटू दोउ घर लागी आग, बचा कोइ भागि के ॥३१॥
ओऔ औरों बैर बिहाय[3] प्रीति सज्जन से जोड़ो ।
बड़े अनाड़ी लोग जोड़ि के पाछे तोड़ा ॥

---

(१) पराई । (२) नाम । (३) छोड़ कर ।

मौत देहि भगवान सजन से है जु बिछोहा ।
अरे हाँ पलटू हँसिहैं बैरी लोग, जीति जब पइहैं दोहा[1] ॥३२॥
अंअः औडँ ओअं एक और नाहीं कोइ दूजा ॥
एक ब्रह्म संसार करौं मैं किसकी पूजा ।
समुझ पड़ा करतार करम को किया भगूरा ।
अरे हाँ पलटू दुरमति भागी दूरि, मिला जब सतगुरु पूरा ॥३३॥

॥ कबित्त ॥

पूरन ब्रह्म रहे घट में,
सठ तीरथ कानन[2] खोजन जाई ।
कीट पतंग रहे परिपूरन,
कहु तिल एक न होत जुदा ही ॥
नैन दियो हरि देखन को,
पलटू सब में प्रभु देत दिखाई ।
ढूँढ़त अंध गरंथन में,
लिखि कागद में कहुँ राम लुकाही ॥१॥
चाहौं ना चारि धाम चहौं ना सात पुरी,
चाहौं ना तीरथ ना द्वारिका दगावना ।
नहीं चहौं कैलास नहीं ब्रह्म लोक बास,
चहौं ना बैकुंठ नाहिं नर्कहू को भावना ॥
चाहौं ना इंद्र लोक चाहौं ना मुक्ति द्वार,
चाहौं ना राम नाहिं भक्ति को बढ़ावना ।
चाहै न पलटूदास पूजो है सकल आस,
एक चाह रही संत रेनु के री चाहना ॥२॥

---

(१) द्रोही या दुश्मन । (२) बन ।

सुक्ख में मगन औ दुख में दिलगीरी आवै,
मरत है बड़ाई को छोटाई की अचाहना।
अस्तुति में फूलै औ क्रोध करै निन्दा सुनि,
मित्र सेती भाव करै दुष्ट से अभावना॥
संपति में खुसी औ बिपति बिलाप बड़ा,
पूजै में कष्ट है पुजावने की कामना।
पलटूदास चिन्ता ज्यों चरत है सरीर कहै,
बिगरी फकीरी बेकूफी से ना बना॥३॥
राजा युधिष्ठिर ने जा दिना कराई यज्ञ,
सुर नर मुनि द्विज सब को बुलाई है।
बड़े बड़े तपसी ऋषेसुर सनकादि आये,
स्री किसन सहित भोजन सब को कराई है॥
बाजी ना पंचायन संख सबै सिर नीचे किहो।
ऐसी भरी सभा में लज्जा सब को आई है।
पलटूदास स्वपच ने उठाई है ग्रास जब,
जेती सीत खाई तेती बेर उन बजाई है॥४॥
बज्यौ जब डंक तब छुटेउ गढ़ लंक,
चढ़ेउ भगवन्त तिहुँ लोक जाना।
पवन का घोर लै गगन में छोर,
रिपु कटक बल भोर छुटे ज्ञान बाना॥
खुसी तैंतीस[1] जब कटे भुज बीस,
धरि मारु दससीस मन राउ राना।
बिभीखन दास करि सुन्न में बास,
तब सत्त की सीता लै अवध आना।

(१) तैंतिस कोटि देवता।

भयो जब राज लै प्रेम समाज,
पलटू दास सुजान आनंद माना ॥५॥

नये नये कलसन में बाम्हन जल भरत रोज,
नये नये बासन में भोजन बनाई है।
दाल चावल बीनि बोनि करते अमनिया हम,
छत्तिस ब्यंजन षट रस भली भाँति से बनाई है।
सोने के थार में परोसि के हम आगे धरे,
एक सीत अपने हाथ कबहूँ ना पाई है।
पलटूदास ऊँच छोड़ि नीचन से रीझि रहे,
सवरी की जूठो बेर माँगि माँगि खाई है ॥६॥
नहाते त्रिकाल रोज पण्डित अचारी बड़े,
सदा पट[1] बसतर, सूत अंग ना लगाई है।
पूजा नैबेद आरती करते हम बिधि बिधान,
चंदन औ तुलसी भली भाँति से चढ़ाई है॥
हारे हम कुलीन सब कोटि कोटि कै उपाय,
कैसे तुम ठाकुर हम सपनेहू न पाई है।
पलटूदास देखौ यह रीझ मेरे साहिब की,
गये हैं कहाँ जब रैदास ने बुलाई है ॥७॥

॥ सवैया ॥

छिन में बहुत हरि तरँग उठै,
छिन में धन खोजत लोग लुगाई।
छिन में बहु जोग बैराग कथै,
छिन काम किरोध को मारन धाई॥

(१) रेशमी।

छिन में बहु भोग बिलास करै,
छिन में उठि धाय करै कुटिलाई।
पलटू कपटी मन चोट करै,
हम भागि बचे गुरु की सरनाई ॥१॥
चोर चंडाल चमार कहै,
और कोऊ कहै हरिदास है भाई।
कोऊ कहै यह तो नारि लुभानो,
कोऊ कहै माया रति आई ॥
निंद करै ता से निंद करैये,
अस्तुति को न मनावन जाई।
जो हम हैं हरि जानत हैं,
अब रैन दिवस उनको गुन गाई ॥२॥

॥ इति ॥

पलटू साहब के असली चित्र की आवश्यकता है। प्रेमी पाठकों से निवेदन है कि जिनके पास हो या प्राप्त करा सकें वह नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें।

मैनेजर
बेलविडियर प्रेस, प्रयाग

संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का संशोधित मूल्यपत्र १-१-६८ से

संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह	१।)
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१॥।)
कबीर साहिब का बीजक	१॥)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	२॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	१॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	१॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	॥)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने	१)
कबीर साहिब की अखरावती	॥)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	१)
तुलसी साहिब हाथरसवाले की शब्दावली भाग १	२)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रन्थ सहित	२)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	२॥)
तुलसी साहिब का घटरामायण पहला भाग	३)
तुलसी साहिब का घटरामायण दूसरा भाग	३)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	३)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	३)
सुन्दर बिलास	२)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	१॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया	१॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	१॥।)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	१॥)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	१॥)
दूलनदास जी की बानी	॥=)
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	१।)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	१।)
गरीबदास जी की बानी	२॥)
रैदास जी की बानी	१)
दरिया साहिब बिहार का दरिया सागर	॥।)
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	॥।)
दरिया साहिब मारवाड़ वाले की बानी	॥।)
भीखा साहिब की शब्दावली	१)
गुलाल साहिब की बानी	१।)
बाबा मलूकदास जी की बानी	॥)
गुसाइं तुलसीदास जी की बारहमासी	=)
यारी साहिब की रत्नावली	।)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	॥)
केशवदास जी की अमीघूँट	।)
धरनीदास जी की बानी	॥)
मीराबाई की शब्दावली	१)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश	१।)
दयाबाई की बानी	॥)
संतबानी संग्रह, भाग १ साखी [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	३)
संतबानी संग्रह, भाग २ शब्द [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	३)
लोक परलोक हितकारी	२)
अहिल्याबाई अँग्रेजी पद में	।)

संत महात्माओं के चित्र—

कबीर साहब	=)
दादूदयाल	=)
मीराबाई	=)
दरिया साहब बिहार	=)
मलूकदास	=)

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है, वह अलग से लिया जावेगा।

ग्राहकों से निवेदन है कि किताबों का आर्डर भेजते समय चौथाई दाम अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजना आवश्यक है तथा मनीआर्डर फार्म पर ग्राहकों को दोनों तरफ अपना सही पता बड़े-बड़े अक्षरों में साफ-साफ लिखना चाहिये ताकि पुस्तक ठीक तरह पहुँच सकें।

पता—मैनेजर, संतबानी पुस्तकमाला, बेलविडियर प्रेस, प्रयाग
१३, मोतीलाल नेहरू रोड (विश्वविद्यालय के सामने)